# भक्ताम्बुनिधि

## जिसमें

रामविनय, भक्तिवन्दना, भगवद्भक्तोंका माहात्म्य, सत्सङ्गमाहात्म्य, नाभाजी, राजाहरिश्चन्द्र, राजाबलि, राजादशरथ, भीष्मजी, सुरथ-सुधन्वा, हरिदास, जगदेव, ब्रह्मा, शिव, अगस्त्य, रामानुज, रामानन्द, कृष्णदास, गोविन्ददास, विष्णुस्वामी, वल्लभाचार्य्य और माधवाचार्य्य आदि अनेक भगवद्भक्तों के चरित्र वर्णित हैं ॥

## जिसको

जिलासीतापुर मौजे रामकोट निवासी परमभक्त जियालालत्रिपाठीजीने अत्यन्त परिश्रमसे भक्तानुरागियों के उपकार के लिये दोहा, चौपाई सोरठा आदि मनोहर छन्दों में रचना किया ॥

पहलीबार

५४

लखनऊ

मुंशी नवल किशोर (सी, आई, ई) के छापेखाने में छपी

जनवरी सन् १८९४ ई०

# सूचना ॥

अनेक प्रकार की पुस्तकें इस यंत्रालय में मुद्रित हुई हैं। उन में से जितने पुराण हैं उन से चुनकर कुछ पुस्तकें नीचे लिखीजाती हैं। जिन महाशयों को इस में से किसी पुस्तक की आवश्यकता होवे इस यंत्रके मैनेजर को पत्र लिखकर मंगालें तथा पुस्तकों का जो सूचीपत्र छपा है वह भी मँगाकर देखलें ॥

## सुखसागर

सुखसागर का तर्जुमा पंजाब के रहनेवाले बाबू मक्खन लाल जीने कियाहै इस सुखसागरमें बहुतही मोटेहरूफ और अत्यन्तही उम्दा तसवीरें इत्यादि सब सामानहै कि जिसकी तारीफ़ नहींहोसक्ती और इस किताबकी रजिस्टरीभी होगई है जिन अक्षरों में यह किताब छपीहै उसका नमूना नीचे लिखाहै देखनेही से हाल मालूम होगा ॥

## ( अवशि देखिये देखनयोगू )

सुखसागर, जलीक़लम वा तसवीर छापा लेथूग्राफ़
सुखसागर, जलीक़लम वा तसवीर छापा टैप
सुखसागर, साधारण अक्षरों की बिला तसवीर
सुखसागर भाषा, मोटे अक्षर मयतसवीर छापा टैप

## शिवपुराण भाषा ॥

इसका पंडित प्यारेलालजी ने उर्दूसे हिन्दी भाषामें भाषानुवाद किया है इसमें शिवजीके निर्गुण सगुणस्वरूप का वर्णन सतीचरित्र, गिरिजाचरित्र, स्कन्दकथा, युद्धखण्ड, काशीपुराण, स्थान, शतरुद्रिखंड, लिंगखण्ड, रुद्राक्षवभस्ममाहात्म्य, व्रतों

# भक्ताम्बुनिधिका सूचीपत्र।

इति भक्ताम्बुनिधि का सूचीपत्र समाप्तहुआ॥



# भक्ताम्बुनिधि ॥

छंदशिखरणी ॥

मनोद्भूतस्याहारीधनुकदनकारीरघुपते रघूवंशेमण्डुंऋभवह-
रशोकंसुखकृते अखण्डंअद्वैतंअधिपबहुअखंडंअघघरी इषुंचापंधा
रीजननदुखहारीतनुधरी १ सरोद्भूतंनेत्रं उडुपमुखपीताम्बरधरे
त्रयीलोकस्वामी दशबदनन्नामीवधंकरे रघूनन्दैवन्दैउरगपति
ब्रह्माद्दरहरी भजैंदेवीदेवाअसुरसुरनागापलघरी २ मखंरक्षाहेतुं
मुनिसँगगतंआनँदयुतं सुवाहुंमारींचंकरतअघकीन्होंवधद्रुतं शि
ला दीन्होंतारींसकलअघंहारीसुखकरी अयोध्यानाथस्यचरणमु-
निध्यानालयधरी ३ सो०। श्रीरघुवीर कृपाल दुखदारिद नाशन
सुखद। मेटिकुअक्षर भाल जियालाल राखिय शरण १ रूप
महाछविखानि बरणि सकै असकौन कवि। सुरनर मुनि सुखदा-
नि जगसंभवपालन हरन २ अवधपुरी निजधाम ऋद्धिसिद्धि
मंगल सकल। शोभितआठौ याम सुरसुख भोगत नारिनर ३
कल्पवृक्षदिग ताँहँ शोभितमंदिर मणिन युत। रश्मिनिकर अ-
तिजाहँ भूतधारि गांगेयमय ४ चौ० । स्वर्ण वेदिका मध्यशु-
भासन। रतनजटित सोहत सिंहासन ॥ तिहि सिंहासन मध्य
सुहावा। पद्मासन अति शोभा पावा १• मध्यसुदेश कर्णिका

राजै। अद्भुत शिखिसम शोभा साजै ॥ तामधि शोभित श्री-
रघुनायक। त्रोपद तनसेवक सुख दायक २ शिरपर क्रीट मुकुट
छविछाजत। जटित मंजुमणि जलज विराजत ॥ निरखत रवि
शशि उभ लजाहीं। कुंडल झलक कपोलन छाहीं ३ अरुण
तामरस दृगछविछाजैं। भृकुटि मनहुं अलि अवलि विराजैं॥
नासा परमसुदेश सुहाई। कीरतुण्ड छवि देखिलजाई ४ चि-
तवंन चारुरसिक मनहरणी। मन्द हास मन आनँद करणी॥
दीरघ दीप्तललाट सुहायो। सुन्दर तिलक महाछवि छायो ५
जलजहार मणि मालसुहावा ॥ उरश्रीवत्स चिन्ह छविपावा॥
कंठमध्य कौस्तुभ मणि भ्राजै। अपरजनेउ कंध सुखसाजै ६
भुजप्रलम्ब कटि किंकिणि सोहत। रतनजटित सुँदरी मन
मोहत॥ सोहत भूषण त्रिविध प्रकारा। बरणि कौन कवि पावै
पारा ७ नाभि मनोहर रेख समेता। त्रिवली सहित हरत चित
चेता॥ नूपुरपुरट मणिनयुत सोहत। रवकुल सुर संगीत वि-
मोहत ८ युगपद अरुण कमल छविछाजैं। कुलिशादिक चि-
न्हनयुतराजैं॥ दिव्यायुधकर धारणकीन्हे ॥ बामधनुष दक्षिण
शरलीन्हे ९ षोड़शबर्ष रूपनितधारे। कोटिनसूर रूपलखिहारे॥
इहि बिधि श्रीरघुवीर बिराजत। बामभाग सीताछवि छाजत१०
नगनजरे छबिभरे अपारा। शोभित भूषण विविध प्रकारा॥
सुन्दरतन चामीकर शोभा। किधौं तड़ित निरखत मन लो-
भा ११ गज मुक्तन सो मांग सवाँरी। मनहुंदेवसरि शोभा
धारी॥ पाट लरन मधि उज्ज्वलमोती। सघन तिमिर जनु उड-
गण जोती १२ रतन रचित मणि जटित सुहायो। विन्दाराजत
शीशमहायो॥ युगल श्रुतिन ताटंक विराजत। दरशनकरत
अखिल अघभाजत १३ उज्ज्वल भाल सुचारु सुहायो शो-
भित मनहुं सुहागमहायो॥ किधौं भाग्य मन्दिर सुखसाजत।
गोरोचन को तिलक बिराजत १४ नासावेसरि लसत सुहाई।
भृकुटी नयन महाछविछाई॥ बिकसत कमल बदन असला-

गत। अरुण अधरतर दशन विराजत १५ चारु चिबुकबिच मेचक विन्दू। मुक्तमालगल निन्दितइन्दू॥ पदिकरचित कलधौत विशाला। सोहत ग्रीवमनोहर माला १६ हेमतंतुकरि रचित सवाँरी। सोहतभीन अरुण रँगसारी॥ चित्र विचित्र न त्रित्रितसोई। किहिविधि वरणि कहै कविकोई १७ सुन्दरबाहु चुरी कर सोहत। अमित रंग मुंदरी मन मोहत॥ पद्मराग मणि नील बनाये। कंकण युग सोहत मनभाये १८ बनज सुमन जनु षटपद राजी। कंकनकी शोभा इमिछाजी॥ कटिसुदेश लहँगा छबि पावत। पीत असित सित रँगदरशावत १९ हरित नगनसों जरी सुहाई। जेहरि युगल महा सुददाई॥ तिनतर घुंघरू बिछुआराजें। तिनपरनगजु अमोलविराजें २० चुन्नीगण बहुभांतिनलाये। चरण अरुण अति लगत सुहाये॥ अतुलित युगल रूप प्रभुताई। यह उपमा तिनंको लघुताई २१ कोटिन अण्डतनोरुहजासू। यह उपमा अतिही लघुतासू॥ निजमति के अनुसार सुहावा। दम्पति ध्यान रसिक हित गावा २२ यह धरिध्यांन विनय बहुकरिकै। करहुं प्रणाम शीश महि धरिकै॥ करन चहत भक्ताम्बुधि काहीं। चरण आश मम बुधि बल नाहीं २३ शुभ प्रबंध वर्णनचलदीजे। अनुचर जानि कृपा प्रभु कीजे॥ भक्त चरित्र अमल सुखदाई। कहन चहत सो कथा बनाई २४ कीरति रावरि अगम अपारा। ताकहँ वरणि लहै को पारा॥ शारद शेष महेश विधाता। इनपै तवयश वरणि नजाता २५ शंकर वेद पुराण बखानत। देवदैत्य कोउअंतन जानत॥ परे बुद्धि मनरूप तुम्हारा। जनके हेत लेत अवतारा २६ जब जब आरत भक्त पुकारत। तिनदुख देखि जगत वपु धारत॥ बाहर लोक बेदकीरीती। बिद्या कुलान जानत नीती २७ महा असाधु अधम कुलहीना। ते उत्तम गति में भे लीना॥ केवल तव कीर्त्तन को करिकै। गे परलोक महा मुद भरिकै २८ निरगुण सगुण तववपुराजत। दोनों में बड़ नाम वि-

राजत॥ जबतब नामहिं भक्त उचारत। तबतुमजाइ दीहदुखटारत॥
गज पुकार कीन्हो जल माहीं। तब तुम रक्षा कीन तहांहीं॥
द्रुपदसुता जब नाम पुकारा। तब तुम जाइ बसन तनधारा ३०
नामकुरंगिनिजबहिं पुकारी। तब तुम ताकहँलीन उबारी॥ पांडु
सुवन जबनाम पुकारा। लाक्षागढ़ में तिनहिं उबारा ३१ नाम-
हिंको प्रह्लाद पुकारा। खंभमांझ नरहरि वपुधारा॥ पुनि ध्रुव
जपतभये तवनामा। दीन्हो अचलअनूपमठामा ३२ अजामील
भाषो तवनामा। ताहि बुलाइ लियो निजधामा॥ नामभजन
पारथ जबकीन्हो। शरके हेठ पीठितब दीन्हो ३३ जो ये नाम
भजन नहिं धरते। तौकाहे प्रभुरक्षाकरते॥ ताते नाम बड़ोदुहुं
माहीं। वेदपुराण कहैं बहुधाहीं ३४ दोनों रूपनाम आधीना।
नाम अगुण रस गुण बिनलीना॥ निरगुण रूप कोउ नहिं जा-
नै। निराकारतिहि वेद बखानै ३५ निरगुण केररूप कछुनाहीं।
केवल नामै अहैसदाहीं॥ सोइनाम जन दुखितउचारैं। तबहीं
प्रभुसरगुणवपुधारैं ३६ संतन सुखदेदुष्टनमारी। नामहिं लीन होत
बनवारी॥ केवल नाम उभय दरशावत। निरगुण सरगुण रूप
बतावत ३७ दो०। सोइनाम उरमांझ धरिरामहिं शीशनवाय।
भक्तअम्बुनिधिवरणऊं सुनिकलि कलुषनशाय १ बंदौं श्रीगुरुपद
कमल जोरिपानि अरुजानु॥ जासुकृपा मोहहिदलन तिमिर नि-
करकरभानु २ चौ०। अब श्रीभक्तिहि शीशनवावौं। जासुकृपा
निर्मलमतिपावौं॥ सो रघुनन्दन की पटरानी। भक्तजननकहँ
अति सुखदानी १ श्रीरघुनाथ कर्म अनुसारा। दुखसुखदेत जनन
बहुबारा॥ भक्तिकृपालु महासुखदाई। भक्तनदुखहरि सुखदरशाई २
वेदपुराणविदित यशजासू। हरिसो अधिक कहतबुधतासू॥ पद्म
पुराण कहतइहिभांती। जैसेकाठ अग्निजरिजाती ३ तैसे भगवत
भक्तिप्रतापा। संचितइहिंजनु नाशंतपापा॥ करतप्रार्थना हरिसों
देवा। जो हमजपतप कीन्हीसेवा ४ ताकोफलहमको यहदीजै।
भरतखण्डमहँ जन्महिलीजै॥ तहांरावरी भक्तिहिधारैं। सकल

त्रास दुख दोषन दारैं ५ पुनि नारदपुराण यहगावत । भक्तिहि
धारिभक्त हरिपावत ॥ जलसों हरिकहँ पूजनकीन्हें । पावत
हरिहि भक्ति मनदीन्हें ६ पुनि बामन पुराण यहकहई । जासु
अनन्य भक्तिजग अहई ॥ शंखचक्र धारीनारायण। निश्चय
करिजेनर पारायण ७ प्रातहोत नारायण पाहीं । सत्यबात यह
संशय नाहीं ॥ यहभारत इहिभांति पुकारत । करितप ध्यान
पापजो जारत ८ जन्म सहस्रनपाप नंशावत। तेभगवत की
भक्तिहि पावत ॥ पुनिबैशाख महातम गावै । दुर्लभ भरतखण्ड
महँ आवै ९ तामहँ नरतन दुर्लभजोई । पुनिदुर्लभ सुधर्म रत
होई ॥ अतिदुर्लभ जो भक्तिहि धारै । भक्तिधारि निजकार्य सँ-
वारै १० पद्मपुराण कहत इहिभांती । जाउर भक्ति प्रेमकीपांती॥
तिहियमराज स्वप्न नहिंदेखा । प्रेतपिशाच विघ्ननहिं लेखा ११
पुनिनारदपुराण यहगावत । अर्थादिक हितजन श्रमलावत ॥
भक्तिकरत बिनश्रम अनयासा । अर्थादिक आवहिं तिहिपासा
१२ पद्मपुराण बहुरि असबोले । मुक्तिद्वार भक्तन हितखोले ॥
यहनिश्चय सन्देह बिनाहीं । भक्तिसमान अपर कछुनाहीं १३
पुनिब्रह्माण्ड पुराण बखाना । जिंनभगवतकी भक्ति नजाना ॥
तिनके हेतु सुकोटिनकल्पा। ज्ञानमुक्ति नहिंप्रापतिअल्पा १४
इहिविधि लिखाभागवतमाहीं । कहो कृष्ण उद्धवके पाहीं ॥ सां
ख्यवेद वैराग्य कहाये । भक्तिसमान मोहिं नहिंभाये १५ भाषत
इमि अस्कंद पुराना । उत्तमअंग न भक्ति समआना॥ इहिविधि
है भगवतकी बानी । केवल अधभक्ति ममजानी १६ गोपी
गऊवृक्षपशु साँपा । हमको प्राप्तभये दहिपापा ॥ पुनि भागवत
कहत यहबानी । जो फल जप तप योग बखानी १७ जोफल
ज्ञान विरागहि कीन्हें । जो फल अमितदानके दीन्हें ॥ सोफल
भक्त निमिषमहँपावै । भक्तिधारि ममकीरति गावै १८ पुनिनारद
पुराण इमिगावै । ज्ञानबिना नहिंमुक्ति बतावै ॥ सोवहज्ञानभक्ति
आधीना । बिनाभक्ति किमिपावैदीना १९ सहसन अश्वमेध

मखकीजै। भक्तिविना निष्फल गनिलीजै॥ अरुजे कर्म वेद अनुसारा। भक्तिविना नहिंसुख संचारा २० पुनि अस्कंदपुराण बखाना। रहतंजहां हरिभक्त सुजाना॥ ब्रह्माहरि हरसुर समुदाई। सिद्धनिवासकरततहँआई २१ इहिविधि भक्तिप्रताप महाना। वेदपुराणन सुयश बखाना॥ ताकेयुग चरणन शिरधरिकै। भक्ताम्बुधि वरणौं मुदभरिकै २२ दो०। श्रीभगवत की भक्तिको रूपकहत अवगाय॥ जाकी महिमा इविधिहै सोई कहत बुझाय २३ चौ०। वेदसूत्र सिद्धांत, बिचारा। यहदृढ़ बातहोत निरधारा॥ भगवत माहँपरम अनुरागा। सोई भक्ति कहत बड़भागा २४ सोसांडिल्यऋषीश्वरभाखा। सोईसूत्र अग्रलिखि राखा॥ सूत्रताहि वर्णत सबकोई। थोरेवर्ण अर्थ बहुहोई २५ यथा सापरानुरक्ती ईश्वरे इदंसूत्रं। लिंगपुराण कहत यहभेवा। कर्म वचन मन भगवतसेवा॥ ताकोनाम भक्ति सुखकारी। तंत्रशास्त्र इमि कहत पुकारी २६ त्यक्षर भक्तिमाँझ पहिचानौ। प्रथमभभव दुख नाशन जानौ॥ दोसरिका कल्याण निवासू। तृतियति तीव्र ज्ञान परकासू २७ सनत्कुमार संहिता भाषत। भक्तिनाम तिहि सब दुखनाशत॥ बिष्णुपुराण कहत इमिगाई। ताकहँ भक्ति कहत सुखदाई २८ शास्त्र कहत सो कर्म करीजै। त्यागन कहत तिनहिं तजिदीजै॥ पुनिसाहित्यशास्त्र इमिभाखा। जिनरसनेह काव्य गुनिराखा २९ सात्विक ज्ञानशुद्ध जब होई। ताकहँ नाम भक्ति कहसोई॥ इहिविधि वेदपुराणन माहीं। भक्ति नाम बरणे बहुधाहीं ३० दो०। केवल हरिचरणनविषे होवैदृढ़ अनुराग॥ सोई भक्ति कहावई ताहिगहत बड़भाग ३१ नरकादिक के भयन तजि स्वर्गादिक सुखछाँड़ि। भगवत सुंदरता उदधि रहै रूपसोमण्डि ३२ उदासीन जगसों रहै रूपमगन मनहोइ। द्वै अखण्ड निश्चलसदा भक्ति नामहै सोइ ३३ द्वै प्रकार की सोइकहावै। अविहित विहित नाम छबिपावै॥ शास्त्र रीति आज्ञाअनुसारा। ताकहँ बिहित नाम सुखसारा ३४ ताकेभेद चारि बिधि जानौ।

एककामना अर्थबखानौ ॥ जैसे ध्रुव निज कारज हेता। अपर गोपिका गणनसमेता ३५ दोसरि शत्रुभाव पहिंचानी। जिमि रावण शिशुपाल सुठानी ॥ तीसर भेद भयातुर जानौं। मारीचहु कंसादिबखानौ ३६ चौथेभेद प्रेम पहिचानी। जिमि नारदसनकादिक जानी ॥ ये जो चारो भेद प्रचारे। भय रिपुरीति उपासन न्यारे ३७ दूजो अविहित कियो बखाना। तासुस्वभाव करत अवगाना ॥ शास्त्रायसुविन आपुहि आपू। प्रगटत भगवतप्रीति प्रतापू ३८ ताहूके द्वै भेद बखाने। प्रथमहि ज्ञानांगा मन आने ॥ ज्ञानहि उतपति करिकै जोई। मुक्ति देइ ज्ञानांगा सोई ३९ द्वितिय स्वतंत्रा बहुरि बखानी। आपुहि मुक्ति देति सुखखानी ॥ तीनि भांति पुनि भक्तिहि जानौ। उत्तम मध्यम प्राकृत मानौ ४० उत्तम को इहि भांति बखाना। ठाम ठाम भगवतमय जाना ॥ नीरतरंग सदृश अवलोकै। व्यापकवर्तमान प्रभुएकै ४१ बहुरिप्रीति भगवत में जोकर। दया करत प्राकृत भक्तोंपर ॥ आपन मित्र भक्ति कोजानत। द्वेषिजनों से अनमिल मानत ४२ ताकहँ मध्यम भक्ति बिचारिय। तदुपरि प्राकृत भक्ति उचारिय ॥ भगवत अरु भगवत की मूरति। ईश्वर जानि करै दृढ़ सूरति ४३ भगवत भक्तोंमें नहिं प्रीती। प्राकृत भक्ति केरि यह रीती ॥ सात्विक राजस तामस तेरे। त्रैबिधि बचन भागवत केरे ४४ जोनिष्काम सुसात्विक जानौ। जैसे प्रहलादादिकमानौ ॥ राजस सोइ सकाम लखाती। ध्रुव गज इत्यादिक जिहिभांती ४५ शत्रु विजय हित तामस जानिय। वृत्तबधन हित जिमिहरि मानिय॥ अपर भक्ति के तीन प्रकारा। श्री भागवत पुराण उचारा ४६ मानस प्रथम जुमनते होई। बाचक दोसरि बोलन सोई ॥ प्रगट देह सो काइक अहई। गीता बहुरि चारिबिधि कहई ४७ एकआर्त्त दुखसों हरिगावैं। जिमि द्रौपदि गजादि छबिपावैं ॥ जिज्ञासूदोसरहैं सोई। राह मुक्तिकी ढूंढ़त जोई ४८ भये परीक्षित राजा जैसे। तीसर

अर्थार्थी ध्रुव तैसे॥ चौथे ज्ञानी जिमि नारद मुनि । प्रह्लादहु सनकादिकहू पुनि ४९ बहुरि भक्ति के हैं त्रैभेदा । वर्णत सोइ हरणभव खेदा ॥ एक वहैजो आपुहिकीजै । दोसरि औरन को सिख दीजै ५० भक्ति करत औरन कहँ देखै । होइसुखी सो तृतिय बिशेखै॥ पुनिताके नव भेदबखाना । श्रीभागवत माहँ सुखदाना ५१ श्रवण कीर्तन सुमिरण जानौं । सेवा अर्चा वन्दन मानौ । दास्य सख्य अरु आत्म निवेदन । एनव भेद हरणभव खेदन ५२ बहुरि भक्तिके गेरह भेदा । भाषत हरण सकल भव खेदा ॥ प्रथम भेद सतसंग बखाना । दया प्रसन्नताहु पुनि आना ५३ तीसरि भक्तोंके जे करमा । शांत दया युत धारण धरमा ॥ श्रवण करन हरिचरित सुहाये । चौथो भेद भांति इमि गाये ५४ श्रवण किया जो भगवत रूपा । तामहँ उपजै प्रेमअनूपा ॥ सोई पंचम भेद कहावै । छठयें भेद धरै इमि भावै ५५ निज स्वरूप अरु भगवत रूपा । जानि यथार्थ लेइ अनुरूपा ॥ ज्ञानकहत अद्वैत बखानी । सोइ अवस्था धारै प्रानी ५६ भगवत वपुमें प्रेम बढ़ावै ॥ सोइ सातवीं भक्ति कहावै ॥ उरप्रकाश दिनदिन प्रति होई । भगवतको आठविं है सोई ५७ दया और निरमलता धरई । भगवत माहिं धर्म अनुसरई । ये सबधर्म हृदय महँआवैं । सोईनवमभेद कबि गावैं ५८ दशम भेद इहि विधि ते जानिय । ईश्वरताहु दया उरआनिय । पूरण पुरुषमाहिं मनलावै । सर्बज्ञता धारि सुखपावै ५९ पुनि गेरहौं भेदइमि भनिये । जितनी प्रीति देह निज गनिये ॥ तैसी हरिमें प्रीति लगावै । निश्चल क्षणक्षण सुख उपजावै ६० वही भक्ति पुनि तीस प्रकारा । क्रम क्रम अधिक भई सुखसारा ॥ यहसब भक्ति भेद इहि हेता । जिमि मन लागै भक्ति निकेता ६१ हरिजिन मंन लागै जिहि भावै । सोइएक विधि भक्ति कहावैं ॥ जैसे श्री उद्धवसुख पाई । हरि सों प्रश्न कियो मुददाई ६२ कोई चौबिस तत्वबखानै । सत्रहकौ सोलह

कौ मानै ॥ पांचकोउ कौ तीनिविचारत । सातकोउ कौआठ उचारत ६३ सो बिरोध को कारण भाषिय । राउर मुख सुनि मन गुनि राखिय ॥ यह सुनि भगवत बचन बखानो । उद्धव नहिं विरोध कछु मानो ६४ दो० । मिलो तत्त्व दूजेबिषे एक तत्त्व जिन देख । ताकी गणनाके विषे कमती तत्त्व विशेख ६५ चौ० । न्यारे न्यारे जिन अनुमाना । तिनकी गणना अधिक बखाना ॥ तीनि भेद जिन मनमहँ आने । ईश्वर मायाजीव बखानै ६६ भगवत इच्छा मायाजानत । तिनकी गणना दोइ बखानत ॥ इहि बिधि तत्त्वनको बिस्तारा । उद्धव सोभगवान उचारा ६७ कारण मूल एक भगवानै । दोसरि अब दृष्टांत बखान ॥ बरगद पादप कोउ बिलोके । द्वै शाखा तामहँ अवलोकै ६८ बरगद चारिशाखको देखी । चारिशाख सो कहत बिशेखी ॥ वास्तव करके बरगद एका । यहीं भांति सो भक्ति बिवेका ६९ भक्तन केरिलगन अनुसारा । भक्ति लखातीं कई प्रकारा ॥ सबकर तात्पर्य यह होई । कौनौ भांति भक्तिकर कोई ७० दृढ़अनुराग जबहिं मनआवै । तबहिं प्रयोजन सिद्ध कहावै ॥ प्रीति सिद्ध पदको नहिं जावै । तबतक साधन रूपकहावै ७१ थायी भाव पहुंचि गे जबहीं । सो फल रूप कहावत तबहीं ॥ है दृढ़भावन साधनदूजा । जीवनमुक्त सोइ पद पूजा ७२ अबभगवत भक्तोंके चरणा । बन्दन करौं सकल भ्रम हरणा ॥ जिनभगवतकी भक्तिहि धारा । तिनहिं प्रणाम करौं बहु बारा ७३ श्रीभागवतमाहँ इमिभाषे । जिनके सुमिरण के अभिलाषे ॥ होत सहितपरिवार पवित्रा । जोगावत हरिदास चरित्रा ७४ दर्शं परस अरु सेवा करई । मनक्रम बचन पाप लखि जरई ॥ बहुरि भागवत कहत बखानी । डूबतउद्धरत भवनिधि प्रानी ७५ तिनको भक्ति पोतसमआहीं । भगवत कहत भागवत माहीं ॥ मैं भक्तनके सदाअधीना । भक्तस्वतंत्र भक्तिरसभीना ७६ पद्मपुराण माहँ भगवाना । इहिबिधि कीन्हो बचन

बखाना ॥ जौन भक्त भगवत भक्तनके। मेरेभक्त तौन ममनके ७७ साधुन की महिमा अवगाहा। बिधि हरिहर कवि पाव न थाहा ॥ जिनकी सतसंगति मनआनी। ब्रह्मसुखहि भोगत वर प्रानी ७८ पारस के गुण सदा संतधर। शठ कुधातु सुवरण शुचिमनकर ॥ पारस तिनसम होत न कबहूं। वेदपुराण बिदित जग अबहूं ७९ पारस करत लोहजाम्बूनद। निज समकरत संत हरि जगगद ॥ पारससो पारसनहिं होई। संत करत निज सम खल जोई ८० देखिय करिबिचार मनमाहीं। बिन सतसंग प्राप्त कछुनाहीं ॥ एकसमयभो बाद बिचित्रा। परवत ऋषि अरु बिश्वामित्रा ८१ बिश्वामित्र तपहि बड़ भाषत। परवत सतसंगहि बड़ राखत ॥ दोनों गये शेषके पासा। कही बुझाइ सकल इतिहासा ८२ सुनत धरणिधर बचन उचारे। एक मुहूर्त धरणि जो धारे ॥ सोई बड़ो जानिकैं लीजै। और कछूसन्देहन कीजै ८३ यह सुनि बिश्वामित्र उदारा। जन्म भरे को तप फल धारा ॥ धरतीठहरत जबनहिं देखी। परवत लिय सतसंग त्रिशेखी ८४ एक मुहूरतको फल धारा। धरती ठहरिगई तिहिबारा ॥ इहिबिधि शेष न्याव करिदीन्हो। दोनों ऋषि मारग निज लीन्हो ८५ है सतसंग प्रताप महाना। बेदपुराण कीनयशगाना ॥ हरिहर अज मुनि भेदनजानैं। कविकोबिद किहिभांति बखानैं ८६ अबबन्दौं तिन पद दुखहर्ता। नाभाभक्तमाल के कर्ता ॥ जिनबरणोहरियश मनभावन। गावत सुनत होत जन पावन ८७ दक्षिण दिशि तैलंग सुदेशा। गोदावरी समीप सुवेशा ॥ तहां पहाड़ रामभद्राचल। कछुदिन राम बसे ताही थल ८८ तहँवां श्रीहनुमान सुअंशा। उपजे द्विज महाराष्ट्र सुबंशा ॥ रामदास अस नाम कहावा। सो हनुमान् बंश छवि पावा ८९ श्रीरघुनाथ उपासन माहीं। दीन लगाइ जनन बहुधाहीं ॥ उपजत आइ वंश इहि जोई। गान बेद अधिकारी होई ९० तौने बंश माहँ सुखखानी। नाभाजी जन्मत भेआनी ॥ नाभारहे जन्म के सूरा।

तहां अकाल परो परिपूरा ९१ तिनको पिता मृत्युबश भयऊ। तिनहिं मातु कानन तजिदयऊ॥ कील्हदासजी अग्रदासजी। नाभहि देखिकरी दायाजी ९२ जलछीटामारो नेत्रंनपर। नेत्रखुले वृत्तांत पूछकर॥ गलताजीमें तिनहिं लयाये। चेलाकरिदुखदूरिबहाये ९३ नाम धरो नारायण दासा। साधुप्रसादी खात सुखासा॥ दिनप्रति साधु प्रसादी खावा। तासों दिव्य ज्ञानहै आवा ९४ दो०। एक समय श्रीअग्रजी करत मानसीध्यान। बणि कपोत अटके जलधि डुब्रिताई मन आन ९५ तबनाभाजी कहतभे सुनि लीजै महराज। सावधान पूजाकरिय छूटत भये जहाज ९६ चौ०। तबहिं अग्रजी आज्ञा कयऊ। जासु प्रसादि ज्ञान यह भयऊ॥ तिन भक्तनके यशहि बखानो। सुनि नाभा उरआनँद मानो ९७ छप्पैछन्दनमें तिहि काला। रचत भये भक्तनकी माला॥ जन मणि गण से भरा अपारा। भक्तमाल भक्तन सुखसारा ९८ जिसने निज उर धारण कीन्हा। तिसने भगवत रूपहि चीन्हा॥ शुभ सम्बाद सोइ उर धरिहौं। भक्त अम्बुनिधि विरचित करिहौं ९९ सो०। साधु चरित सुखमूल दुखनाशन तारणतरणं। नाशक सब जगशूल कथाकहौं तिन चरणभजि १००॥

इतिश्रीभगवतंभक्ताऽनुरागदायकजियालालजन्माभेणविरचिते बन्दनावर्णनभक्ताम्बुनिधौप्रथमस्तरंगः १॥

दो०॥ द्वीपरामग्रह बिंधुबरषे सुभगलग्न सुखसार। रामकोट शुभग्राममें भक्तांबुधिअवतार १ रामलषण।सियपंद्मपद दुखनाशन सुखदानि। करौंदण्डवतशीशधरि बहुरि हृदयमहँआनि २ चौ०। चौबिसनिष्ठाग्रमें कीनी। सो सम्बन्धरसनसों लीनी॥ मूल पांच रस भक्तमालमें। भक्ति मिलापी सर्व कालमें ३ मूल रसनकी वेद श्रुति है। रसो वेस इहिभांति भनत है॥ तासु अर्थ इहि भांति बखानौ। ईश्वर परमात्मा बपु जानौ ४ रसको अर्थ बहुरि अस भाषत। जिस आनन्द स्वादके चाखत॥ सुखमें डूबि होइ सुभि

हीना। भगवत चरण होइ मनलीना ५ चित्तवृत्ति दृढ़होवै ध्याना। ताको रस कवि करत बखाना ॥ द्वितिय अर्थ पुनिरसको कहिये। जो स्वरूपभगवत को लहिये ६ जिमि वात्सल्य अपर शृंगारा। सखा आदि रसभेदवदारा॥ हृदय रूप प्रत्यक्ष लखाई। दृढ़वृत्तीसो रस कवि गाई ७ कोईकबि इहिविधिते भाषै। जो स्वरूप हियमें अभिलाषै॥ तदाकार जबहीं ह्वै जावै। सो सुखदाता भाव कहावै ८ भावैमें मनवृत्ति दृढ़ावै। ताही को निश्चय रस गावै॥ सो रस एकै ब्रह्म कहावै। प्रगट भये बहु रूप दिखावै ९ जैसे मिट्टी एक प्रकारा। होतनाम घटरूप अपारा॥ जल में जैसोरंग मिलावै। तिही भांतिको रूप लखावै १० जलमें रंगकई बिधिनाहीं। इहीभांति जानिय रसकाहीं॥ सुन्दरता आभूषण जानौ। अरु कटाक्ष कोमलता मानौ ११ इन करिकै जोंहिरजो होई। रस शृंगार कहावत सोई॥ बल उत्साह शूरता सोई। शस्त्र आदि सो प्रगटत जोई १२ ताहि बीररस कविजनराखत। इमि वात्सल्य सख्यहू भाषत॥ कोशशास्त्र रस आठ उचरते। शांत रसहि वर्णननहिं करते १३ पुनि उपनिषद शास्त्रके बादी। शांत रसहि वर्णत हैं आदी॥ और रसन तिहि शास्त्र बतावत। नव साहित्य शास्त्र कहि गावत १४ रौद्र हास्य करुणा शृंगारा। अद्भुतबीर शांत सुखसारा॥ अरुबीभत्स भयानक जानौ। योग्य उपासन द्वै अनुमानौ १५ एक शांत दोसर शृंगारा। तीन अधिक उस में सुखसारा॥ सख्यदास्य वात्सल्य बखानो। इहि बिधि पांच रसन मन आनो १६ यद्यपिसबरसमेंभगवाना। योग्य उपासन पांचबखाना॥ इनमें शीघ्र प्राप्त हरि होवैं। औरन काहूँ भक्तनहिं जोवैं १७ उनको गनि रसमें इमिलीन्हो। रावणआदि मुक्ति हरि दीन्हो॥ हैं रस पांच उपासन वारे। निष्ठा युक्त ग्रंथ मधिधारे १८ दो०। किसी भाव बिश्वाससों निष्ठाभगवतमाहिं। आराधन जिहिविधिकरै रस व्यतिरिक्त सुनाहिं १९ चौ०। येजो रस वरणे सुखदाना। सामग्री तामहँ श्रुतिजाना॥ एक

विभावद्वितिय अनुभावा। सात्विक व्यभिचारी पुनिगावा २० कारणमूल प्रगट रसकोई। ताहिविभाव कहत कविलोई॥ ताहू के द्वैभेद बखाने। आलम्बन उद्दीपनजाने २१ आलम्बन विभाव द्वै भांती। इकआश्रय आलम्बन जाती॥ जोरसरहनेका अस्थाना। अथवा रसउतपति अस्थाना २२ भगवतभक्त आश्रयीजानौ। विषयालम्बन दोसरमानौ॥ अथवारस सूरति शृंगारा। भगवतरूप ध्यान सुखसारा २३ दोसरउद्दीपनहै जोई। चारिप्रकार कहावत सोई॥ प्रथम भेदइहिंविधिते जानै। सुंदरता हरिकी उरआनै २४ नवयौवन मनमोहन रूपा। अथवा बालकिशोर स्वरूपा॥ बोलनआदि प्रीति मनलावै। दोसरचेष्टा भेदकहावै २५ दो०। क्रांतिगर्व सुकुमारता हावभाव अरु झलक। अरु कटाच्छ आदिकविषे नेक न टारै पलक२६ आभूषण इत्यादिसज वस्त्रआदि सजजोइ। अलंकार सो जानिये है तटस्थ चौथोइ २७ चौ०। अतरपान आदिकलै दयऊ। इमि विभाव वर्णन यहभयऊ॥ दोसरिसामग्री अनुभावा। भवदुख कानन दाहनदावा २८ नेहकरनवालाहै जोई। जापरनेह करत हैसोई॥ द्वौएकत्र प्रकट जोबाता। तासोंरस प्रत्यच्छलखाता२९ मिलन परस्पर खेलनसाथा। बैठनगले मांझ धरिहाथा॥ ठट्ठा हँसीलेटना संगा। चुंबन वा आलिंगन अंगा ३० तीसरिसामग्री व्यभिचारी। चंचलदशा तासु अतिप्यारी॥ चौथीसामग्री हैजोई। सात्विक अत्र वर्णतहैं सोई ३१ एकदशा सब रसमें होई। सात्विकनाम कहावतसोई॥ सात्विकताको कहत बिशेखी। अपने प्रियवल्लभको देखी ३२ दो०। अथवा ताकीओर से दुखसुख आवैजोइ। मनकीवृत्तीको दशा प्राप्तहोतहै सोइ ३३ चौ०। सात्विकदशा आठपरकारा। ताकोवरणि कहत विस्तारा॥ प्रथमैनामस्तंभ कहावै। ज्योंकात्यों जबहींरहजावै ३४ दोसरिप्रलय जुमुर्छाजानौ। तीसरिरोमांचहु मनआनौ॥ चौथीस्वेद पसीनाआवै। पंचम विवरण मुखद्युति जावै ३५ छठई

कम्प शरीरकँपावै। सप्तम अश्रु आंशु बहवावै॥ अष्टमहै स्वरभंग सुहाई। भेदशब्दमहँ परत जनाई ३६ एकदशा पुनिमरण बखानों। व्यभिचारी वरणनमें आनों॥ अमितहर्ष अथवा अति शोगा। अथवा अतिवियोग संयोगा३७दोउअवस्था एकैभांती। मृत्युदशा सबरस विलगाती॥ इहिविधि भेद कविन मनजानी। व्यभिचारी में ताको आनी ३८ व्यभिचारी भाषतहैं तेही। रसके दृढ़होने पहिलेही॥ अथवा पीछे प्रकटितहोई। जातीरहै प्रगटिकै सोई ३९ ताके तेंतिसभेद बखाने। सबरसमें व्यापक नाहिं जाने॥ प्रथम भेद निर्वेद कहावै। प्यारेको वियोग मनआवै ४० प्रीति दूसरेके सँगदेखै। कछु विपरीत मनै निजलेखै॥ दूसरि ग्लानि देहबलजावै। अपर उमंग नाशको पावै ४१ तीसरि शंका प्यारेहेता। मिलन विघ्न संदेहसुहोता॥ चौथी श्रममारग चलिआवै। वासंभोग अन्त थकिजावै ४२ दो०। पञ्चमधृति संतुष्टता मनकीहोवै जोइ। छठईं जड़ता दुःखयह वियोगादि जबहोइ ४३ सप्तमहर्ष सुदेखकर प्यारेको जोहोइ। अथवा वार्त्तालापमें हरषितहोवै सोइ ४४ अष्टमकहिये दीनता बेचैनी मनजोइ। प्यारेके वीयोगको सहिनसकै मन सोइ४५चौ०नवम उग्रता यहिविधि होई।भई अवज्ञा प्यारेसोई॥ तासों क्रोधहोइकै आवै। दशईं चिन्ता भेदकहावै ४६ प्यारेके मिलनेहित जोई। करैशोच चिन्ताहै सोई॥ ईर्षा कहत गेरहीं रीती। प्यारेमें दूजेकीप्रीती ४७ साझीपना देखिकै जोई। सहि न सकै ईर्षाहै सोई॥ त्रास बारहोंभेद कहावै। आइ अचानक भयजोजावै ४८ भेदतेरहों अमरषसोई। प्यारेकरी अवज्ञाजोई॥ सोदुखसहे सहोनहिं जावै। भेद चौदहों गर्वकहावै ४९ प्यारे निकट प्रेम इमिठानै। आपुसमान न दूसरजानै॥ भेदस्मृति पन्द्रहवों जानिय। प्यारेगुंण सुमिरण मनआनिय ५० मरण भेद सोरहवों धरिये। मरण उपाय करिय वा मरिये॥ सत्रहवों मदभेद बखानो। कार्याकार्य विवेक नआनो ५१ निद्रा अष्टा-

दशो विशेखै । स्वप्नसमान सकलजग देखै ॥ वोनैशवों सुधि असकहिये । सदा जगतसो सोवत रहिये ५२ पुनि अब बोध बीसवों सोई । बेसुधिभये बहुरि सुधिहोई ॥ एकैसवों भेदहै ब्रीड़ा । उपजै प्यारे सँगकरि क्रीड़ा ५३ अपस्मार बाइसवों भनिये । दुखआशा मनको दुखगनिये ॥ मोहनाम तेइसवों जानिय । मनके डगमग दुखभय आनिय ५४ चौबीसवों भेदमति सोई । पथ सिद्धान्त आदिहै जोई ॥ करिविचार निश्चय उर आनिय । पच्चीसवों सुआलस मानिय ५५ छब्बीसम आवेश कहावै । मनरुचि वा अनरुचि उपजावै ॥ होइअचानक परगट जोई । तासों मनको डगमगहोई ५६ सत्ताइसवों वितर्कजाना । सहसन्देह बहुतविधि ध्याना ॥ अवहित्या अट्ठाइस होई । हर्ष शोकके कारणजोई ५७ अपनेजाने कोहछिपावै । उनतीसवों व्याधि कहवावै ॥ प्यारेके वियोगकोपाई । होइ शरीरदुखी बहु भाई ५८ पुनिउन्माद तीसवों लेखत । जड़चैतन्य बराबर देखत ॥ प्यारेमाहँ प्रीति इमिलाई । मतवारेसम रहत सदाई ५९ इकतीसवों विषाद बखाना । निजमनको विरुद्ध विधिनाना ॥ दूरिकरन करतासु उपाई । कोउभांति नहिंपरे लखाई ६० बत्तीसवों सुऔत्सुक लहिये । प्यारेमिलन विलम्ब न सहिये ॥ तेंतीसवों चपलता सोई । मित्रशत्रुके कारण जोई ६१ मनअस्थिर उरमें नहिं धरना । इमिचारो सामग्री वरना ॥ इनरसमें एको जिनपाये । तिन जगके दुखदूरि बहाये ६२ दो० । निज सजाति वीजातिसे जो रसदूरनहोइ । रहत बराबर निजदशा स्थायीभावजु सोइ ६३ चौ० । जो रससे रसको मिटजाना । ताहि सजाती करतबखाना ॥ जिमि शिशुहँसी खेलबहु करहीं ॥ प्रगटत हास्यरसंहि मुदभंरहीं ६४ ताहीसमय बड़ो कोआयो । क्रोधित रौद्र रसंहि प्रगटायो ॥ हँसी निवृत्त करत सो भयऊ । बालकभाजि भवन निजगयऊ ६५ बहुरि विजाती कहियेताही । बालकमग्न हास्यरसमाही ॥ रोटी खानचले सबगयऊ । रससों

रस निवृत्त नहिं भयऊ ६६ दो० । अभिप्राय ताको इहै कोई विघ्नजुहोइ ॥ हरिस्वरूपके ध्यानते चित्तनटारै सोइ ६७ ॥

इतिश्रीभगवद्भक्ताऽनुरागदायकजियालालजन्माग्रेणविरचिते रसवर्णन भक्ताम्बुनिधौद्वितीयस्तरंगः २ ॥

दो० । श्रीरघुवरके पदकमल अंकुशरेखा नौमि । प्रथमधर्म निष्ठाकहौं जासुकथा अतिसौमि १ चौ० । धारो राममीन अवतारा ॥ तासु दण्डवतकरौं अपारा । जिन जगकी शिक्षाहित गायो ॥ नृप श्रुतदेवहि धर्म सिखायो २ निजमाया दिखराइ घनेरी । पुनि रक्षाकीन्ही नृपकेरी ॥ वेदसूत्रके जो अनुकूला । शुभआचरण धर्म सुखमूला ३ निन्दित वेदाज्ञा जोकर्मा । तिनहिं त्यागकरिबो अतिधर्मा ॥ वेदाज्ञा विरुद्ध जेकरहीं । तेनर जाइ नरकमेंपरहीं ४ कठिन यातना तहँवाँपावैं । लक्षचौरासि योनि पुनिआवैं ॥ कठिन जन्मकर दण्डमहाना । सो कछुकरत न बनत बखाना ५ छूटननरकसुअवधि बखाना । जन्ममरणकी नाहिं प्रमाना ॥ आवागमन चक्रकी भांती । तामें मनुजदेह मिलिजाती ६ यहसंसार महोदधिगावा । तामहँ नरशरीर दृढ़ नावा ॥ सोलहि नरउपायकरजोई । जगकेपार अवशिसोहोई ७ नाहितबहुरि दुःखकोपावै । पुनिचौरासी लखमेंजावै ॥ कर्मशास्त्रकी आज्ञामाहीं । युक्तरहब सीढ़ीसमताहीं ८ बिनापरिश्रम शीघ्रहि सोई । उत्तम पदमें प्रापतिहोई ॥ जेनिराश इहिमारगतेरे । तेनिराश उद्धारहुकेरे ९ जासुप्रीति नहिं कर्मनमाहीं । तेकदापि पद सिद्धनजाहीं ॥ देखियकरि बिचार मनमाहीं । तजतआप हरिकर्मननाहीं १० लेतकर्म श्रुतिहित अवतारा । नरबिनकर्म चहतउद्धारा ॥ श्रीगीताजीमें हरिगावैं । हमआपै कर्मनमन लावैं ११ जोहम कर्मनको नहिंकरईं । दूजेलोग सकलु परिहरईं ॥ श्रीरघुबर रावण बधकीन्हो । ब्राह्मणजानि पाप शिरलीन्हो १२ अश्वमेधमख ताहितकीन्हे । कर्मशास्त्र मर्य्यादालीन्हे ॥ ताबिन मानुष किमिसुखपावै । आवागमन शोक किमिजावै १३

जो कोई यह शंकाधारै। कर्म आपुजड़ सो किमितारै॥ ताको उत्तर इहिविधि जानो। जिहिप्रकार नौकाजड़मानो॥ जब हींदास सहारापावै। सहसनकाहँ पारलैजावै॥ पुनि जिहिबिधि सीढ़ीजड़ अहई। ताबिनकौन अटारीलहई १५ इमिभवनिधिमहँ कर्मउबारैं। करिसहाय सो पारउतारैं॥ जोमनमें शंकाय हलावै। कर्मभोगहित पुनि बपुपावै १६ आवागमन जाइगो कैसे। जन्ममरण होवैगो ऐसे॥ ताको उत्तर यहिविधिजानो। द्वैविधिके शुभकर्म बखानो १७ एकसकाम कामनाहेता। सो तौ आवागमन निकेता॥ जबफल कर्म बीतिकै जावै। स्वर्ग भोग करि पृथ्वी आवै १८ दुतियकर्म निष्काम कहावै। सो उद्धारहेत श्रुतिगावै॥ कर्म सोइ निष्काम कहीजै। अर्पण करिभगवत हितदीजै १९ हैं भगवत अच्युत अविनाशी। अपरअनन्त सकल घटबासी॥ तिनको जोफल अर्पण कीजै। सो अनन्त अच्युत गनिलीजै २० ताहीसों प्रसन्न हरिहोवैं। ताकेहृदय प्रीति निजदेवैं॥ जौनभांति कोई कंगाला। कछुक वस्तुलै देतनृपाला २१ तासु वस्तुकेमोल समाना। देतनृपति नहिं ताकोदाना॥ तिहिमर्य्याद विचार न भेवै। अपनी ओर देखिधन देवै २२ यहहै प्राकृत नृपन सुभाऊ। नृपन शिरोमणि कोशलराऊ॥ नितकेकर्म सहायक होवैं। भगवतमाहँ प्रीतिकरिदेवैं २३ दिनप्रति भगवत प्रीति बढ़ावत। उरनिर्मल करिभक्ति दृढ़ावत॥ सोईभक्ति कृपाकोपाई। भगवतपदको पहुंचतजाई॥ २४ बहुरिजन्म ताको नहिंहोई। कर्मशास्त्र हरिआयसु सोई॥ यहतौरीति अहै सबकाले। सेवक प्रभुकी आज्ञापाले २५ जो हरिआज्ञा पालनकरई। आवागमन तासु हरिहरई॥ जोनिष्कामकर्म करिलेखो। ताकोचमत्कार यहदेखो २६ संसारी कामना जहांलौं। भगवत पूरण करततहांलौं॥ जनप्रहलाद कामनाहीना। तिनको राजतिलक हरिकीना २७ अर्जुन अपर युधिष्ठिर राजा। तिनके पूरतभे सबकाजा॥ ध्रुवआदिक बहुभक्त महा

ना। बिनइच्छा भोगे सुखनाना २८ अबसन्देह प्रगट यहकीना।
भेशुभकर्म जाइ हरिलीना॥ अशुभ कर्मनस्सो होजावैं। सोकि
हिभांति नाशकोपावैं २९ ताकोउत्तर इहिविधिजानौ। द्वेप्रका
रके कर्मनमानौ॥ एकज्ञात दोसर अज्ञाता। इहिविधि दूरहोत
अज्ञाता ३० नित्यप्रति संध्या जोकीजै। श्राद्धरुविश्वदेव बलि
दीजै॥ अभ्यागत पूजन सुखदाई। अशुभकर्म इमिजात पला
ई ३१ ज्ञातकर्म अबकहत बखाने। ताकोहाल इविधिते जाने॥
जाकीमति शुभकर्मनमाहीं। तासोंहोत महा अघनाहीं ३२ दैव
योग कोऊ अघहोवै। मार्जन तिहिभगवत करिदेवै॥ शुभकर्म
नकर स्वामीआपा। ताते नाशकरत सबपापा ३३ ताकोहैइहि
विधि ब्यौहारा। जिमिकोऊहै ठेकेदारा॥ तासोंकछू हानिहै जा
वै। ताकोदेन तासु शिरआवै ३४ घरकेदासी सुतसोहानी।
तासुदेन स्वामीपरजानी॥ ठेकेदार समान सकामा। दासीसुत
समान निष्कामा ३५ वेदाज्ञा निष्काम जुकर्मा। यह सिद्धांत
उचितहै धर्मा॥ ज्ञानी और भक्तभेजेई। है ह्वैहैं कर्मन करितेई
३६ गीतामें इहिभांति बखाना। कर्मभाव जनकादिक ज्ञाना॥
थिरतासिद्धिभई मनमाहीं। विनाकर्म छूटत कोनाहीं ३७ इहि
विधिकर्म हृदय धरिलीजै। प्रातहिउठि अस्नान करीजै॥ करै
प्रणामगुरू पितुमाता। सत्यअपर मीठीकह बाता ३८ संग विवे
की जनकोराखै। बिद्यापढ़ै बुरानहिं भाषै॥ लोनखवावै पालन
करई। सेवातिहि निश्छलमन धरई ३९ कबहुं मित्रसे कपट न
आनै। वेदपढ़ावै तिहिगुरु मानै॥ जोभगवतकी ओर लगावै।
ताकोगुरूमानि सुखपावै ४० भगवत भजन आदि बहुकरई।
मिथ्यावच चोरी परिहरई॥ गमन परस्त्रीहिंसा छोड़ै। जुवाखेल
मदिराको ओड़ै ४१ संगअसाधुजनन नहिं कीजै। मिथ्याउत
पातहु ताजिदीजै॥ कपट मिताईको नहिंराखै। तजिमूढ़ता चतु
रताभाषै ४२ पानीबरषत नदीनहाते। मारग चलत बारबनवा-
ते॥ दूजीओर चित्तनहिं धरई। वासीजूठ अशन नहिं करई ४३

तीक्षणखट्टा चारनखाइय। कोमलमिष्ट स्निग्धसुपाइय॥ निशीथनीनहिं नगपरचालै। इमिसहसन आयसु प्रतिपालै ४४ इनादिनलोग कहत इहिभांती। कठिनकर्म कासों करिजाती॥ कठिनकर्म नहिंबेद उचारै। जबकोऊ हियमांझ विचारै ४५ तब तो कठिनसहज लखिपरई। नाहित नाहक बकिबकिमरई॥ जहांवेदअति कठिन बखाना। सहजहुतहां कर्मकियगाना ४६ दीपकतेल हाथ लगिजावै। तहांलिखा बहुमृतिका लावै॥ तहईंबहुरियहौ लिखिदयऊ। धरतीरगड़ि हाथ शुचिभयऊ ४७ कोऊपाहिं पापकौ भयऊ। चान्द्रायणब्रत तहँ लिखिदयऊ॥ बहुरिलिखा जो यहनहिं होवै। कृच्छायन करिके शुचिहोवै ४८ यहौनहोइ तीनिदिन करई। यहौनएक दिवस ब्रतधरई॥ इहिविधिशास्त्र सहजकरि कह्यऊ। ससुझबकरब कठिनह्वै रह्यऊ ४६ जेनहिंवेद वचन मनआने। तेनास्तिक अरुम्लेच्छबखाने॥ वेदशास्त्रजे मिथ्या मानत। स्वर्गनर्क झूठेकरि जानत ५० तिनकीदुर्गति होइ अपारा। नानाभांति लहैं दुखभारा॥ यहसब बात वेदलिखिराखे। नहिंकस्कृत्य अपनि कछुभाषे ५१ तिनकी कथाकहौं अबभाषे। जेइसनिष्ठामें अभिलाषे॥ तिनकी चरणरेणु शिरलावौं। नामधाम संक्षेपहि गावौं ५२ सातभक्त या निष्ठामाहीं। हरिश्चन्द्र प्रथमे तामाहीं॥ हरिश्चन्द्र रविवंशी राजा। राजअयोध्या मांझविराजा ५३ बलप्रतापअरु तेजनिधाना। शास्त्रपुराणन मांझ प्रमाना॥ बहुविधि यज्ञ नृपति तहँकीन्हा। अमितदान बिप्रनकहँ दीन्हा ५४ दो० । यज्ञदक्षिणाके बिषे गाधिसुतहि तिहिकाल॥ राज्यादिक सबवस्तुलै देतभये नरपाल ५५ चौ०। तीनभार सुवरणकेहेता। बिकनगये तिय कुवँरसमेता॥ किसी नगरते पहुंचतभयऊ। सोऊ राज्य नृपहि कररह्यऊ ५६ तहाँ वशिष्ठशत्रुताहेता। अथवा धर्मपरीक्षालेता॥ विश्वामित्र वचन इमिकहई। यहौ नगर तबराज्यम अहई ५७ तबवशिष्ठ राजहिदिय सैना। काशी राज्यमाहिं तबहैना॥ तहां

जाहु सुनिकै नृपआये। काशीपुरीदेखि सुखपाये ५८ तहँ चां-
डालहाथ बिक्रिगयऊ। जाहु मृतकघटियासो कह्यऊ॥ जोकौ
आइ मृतकलै धरई। करहरिलेउ दाह तबकरई ५९ तियसुत
इक ब्राह्मणघरजाई। बिकलभये अति आनँदपाई॥ विश्वामित्र
सांप वपुकयऊ। रोहितासकहँ काटतभयऊ ६० रानी रोदनक
रत अपारा। मृतक जलावनको तिहिबारा॥ पहुंचतभई घाटपर
जाई। करनिमित्त नृप रोंको आई ६१ रानी बहुविधि कहत
पुकारी। करुणावचन सुनावतभारी॥ धर्ममाहँ दृढ़नृपति विशे-
षी। धर्मनतजो दशा यहदेखी ६२ रानीकेढिग कछू न दामा।
जो करदेइ करै यहकामा॥ तबतक निशाआइ नियरानी। बैठी
रही गंगतटरानी। ६३ विश्वामित्र तहां चलिगयऊ॥काशीराजपुत्र
बधकयऊ॥लैरानीकेढिग धरिदीन्हा। प्रातहिजाइप्रगट यहकीन्हा
६४ काशी नृपसों इहिविधि कहई। गंगाकूल तीय यकरहई॥ सो
तौ खात शिशुनकी देहा। ताबिन करै कर्मको एहा ६५ सुनत
लोग ढूँढ़नकहँ धाये। तियके पास मृतक शिशु पाये॥ काशी
राज देखि शिशुदेहा। चाण्डालहि दिय आयसु एहा ६६ या
तियकेर करौबध जाई। सो हरिचन्द्रहि कहोपठाई॥ सुनिराजा
अति आनँद पाये। खड्ग खैंचि रानीढिग आये ६७ जबहिं
चलावन चहो नृपाला। अवनी कांपिउठी तिहिकाला॥ हाय
हाय इमि नभमहँ भयऊ। हरि हर अज सुर नृपकर गह्यऊ ६८
हर्षवंत हरि वचन सुनावै। मांगुमांगु वर जो नृप भावै॥ राजा
कहो भक्ति प्रभु दीजै। अपर कछू इच्छा नहिं कीजै ६९ सुनि
हरि भक्ति देइ सुख पायो। रोहितासकहँ बहुरि जियायो॥ पुनि
जियाय काशीनृप बालक। हरिश्चन्द्रसन कह जनपालक ७०
राज्य अयोध्याकी नृपकीजै। बचन हमार मानिकैलीजै॥ यह
कहिकै निजलोक सिधाये। राजा बहुरि अवधपुर आये ७१ व-
यसमस्त नययुत किय राजू। भक्तियुक्तकीन्हे सबकाजू॥ भक्ति
रीति महँ प्रजन लगाये। हरिचरित्र निशिवासरगाये ७२ अंत-

म रोहितास बुलवाई। दीनराज्य बहुविधि समुझाई॥ करिहरि ध्यान देह तजि दयऊ। जग यशकरि दुर्लभपद लयऊ ७३ दोहा। इविधि कथा हरिचन्दकी कियसंक्षेपहिगान। अबराजा बलिकी कथा सुन्दर करत बखान ७४ चौपाई। भये बिरोचनके बलि पुत्रा। महाभक्त प्रह्लाद सुपौत्रा॥ परमभक्त भगवतको भयऊ। मांगन भीख आपु हरि गयऊ ७५ राजि त्रिलोक देत सो भयऊ। पीठिनपाइ बहुरिकै दयऊ॥ बामनरूप आपु प्रभु धारे। अजहूं खड़ेरहत बलिद्वारे ७६ तिनकी कथा बिदित जग जाना। ताते मैं संक्षेप बखाना॥ यहां ध्यानकरके यह देखो। हरि निजभक्त कियो छल पेखो ७७ ताते निजतनको दुख दयऊ। द्वारपालकर बाना कयऊ॥ और कोउ जो भक्त सतावै। सो किहिंभांति दण्ड नहिं पावै ७८ नृपति दधीचि केरि अब गाथा। बरणौं नाइ रामपद माथा॥ नृप हरिभंजन करत अहनक्का। परउपकारी ज्ञानी भक्ता ७९ जिन निजअस्थि देवतन दयऊ। इन्द्र बनाइ कठिन पवि लयऊ॥ तासों वृत्रासुरको मारा। कठिन दुःख दीरघं निज टारा ८० सिद्धअवस्था प्रापतजेऊ। कर्मशास्त्र छांड़ो नहिं तेऊ॥ ताते कर्म कबहुं नहिं तजई। करि करि कर्म राम नित भजई ८१ अब दशरथकी कथा सुहाई। बरणौं रामचरण शिर नाई॥ परम भागवत धर्म प्रवीना। धर्म कर्म निष्ठा मन लीना ८२ इनकी भाग्य बड़ाई जोई। ताको बरणिसकै नहिं कोई॥ निर्गुण निराकार भगवाना। अज अव्यय मुनि पाव न ध्याना ८३ अलखनिरंजन मन गोतीता। अखिल विश्वकारण शुभ गीता॥ निर्विकार निश्चल जगपारा। अनघ त्रिगुणपर अगम अपारा ८४ संत सुखद असुरन संहारन। सुर द्विज धेनु भूमि भय टारन॥ ऐसेप्रभु करुणासुख सारा। दशरथ गृह लीन्हो अवतारा ८५ बालचरित आदिक बहु कीन्हे। दशरथ नृपकहँ आनँद दीन्हे॥ प्रथमजन्म स्वायंभू भूपा। अरु उनकी रानी शतरूपा ८६ करितप भगवतसे वर

मांगा। तुमसम पुत्र मिलै बड़भागा ॥ जीवन मोर दरश तव देखी। नृप रानी इमि कहो विशेषी ८७ सोई दशरथको तन धारा। तिमि श्रीराम लीन अवतारा ॥ नानाविधि के चरित सुहाये। बालमीकि रामायण गाये ८८ अत्युत्तम सौकोटि श्लोका। सुनत चरित जन होत विशोका ॥ श्रीरघुपतिके चरित सुहाये। भानु भानु सम तिहुपुर छाये ८९ कैकेइहि नरपति वर दयऊ। तासों राम गवन बन कयऊ ॥ चौदह वर्ष वास बन करिकै। रावणादि मारो सुद भरिकै ९० पुनि संसार जलधि गंभीरा। बाँध्यो सुयश सेतु रघुबीरा ॥ महाराज दशरथ मतिधीरा। बिछुरत रघुपति तजे शरीरा ९१ दोहा। रामचरण मन ध्यानकरि रामनाम उरधारि। अब प्रबन्ध भीषम सुभग कहौं सुजन सुखकारि ९२ चौपाई। भीषम भगवत भक्त सुहाये। महाभक्त बारहमें गाये ॥ निष्ठा कर्ममाहँ इमि भाषा। भक्तिहु किये कर्म अभिलाषा ९३ यद्यपि ज्ञानहु भक्तिहु पाये। तबहूं कर्मशास्त्र मनलाये ॥ भीष्मम श्राद्धकरत इकबारा। प्रगटो पिता हाथ सुखसारा ९४ पिण्ड न पिताहाथ मैं दीन्हा। वेदीपर धरिकै सुख कीन्हा ॥ अदन कियो दुर्योधन केरा। सोई समुझि समरकी बेरा ९५ ओर युधिष्ठिरकी नहिं गयऊ। कुनप समर मण्डल तजिदयऊ ॥ गंगाउदर लियोअवतारा। जबगंगा प्रविशी निजधारा ९६ शंतनु व्याकुल भये विशेषा। योजनगंधा इक दिन देखा ॥ राजाके लाये नहिं आई। भीषम वचन दियो तब जाई ९७ हम या देह राज्य नहिं करिहैं। पुत्र तुम्हार राज्यसुख भरिहैं ॥ इमि गृहलाइ पितहि सुखदीन्हा। तासों निजबिवाह नहिं कीन्हा ९८ काशिराज की कन्या जोई। अम्बा नाम विदितहै सोई ॥ तासों जब बिवाह नहिं कयऊ। ताते भृगुपतिसन रणभयऊ ९९ पुनि भीषम इहिभांति दयाला। दीन्हो निज बताइकै काला ॥ जब निशिमाहँ युधिष्ठिरराई। रोदनकिय भीषम ढिगजाई १०० तिहिं दूजेदिन सुरपतिढोटा। वेधेबाणं शिखण्डी

षोटा ॥ तजि स्यन्दन शरशय्यासोये । सो विलोकि कौरवगण रोये १०१ भीषमको प्रणराखि महाना । आपन प्रणत्यागो भगवाना ॥ रहै स्वतन्त्र मृत्यु जिनकेरी । पितु आशिषदिय कृपा घनेरी १०२ बावनदिन शरशय्यामाहीं । रहे भजत भगवत कहँ ताहीं ॥ बहुरि कृष्णमुख दृष्टि लगावत । गये तहां जहँ सो नहिं आवत १०३ ॥

## अथ सुरथसुधन्वाकी कथा ॥

दोहा । सुरथसुधन्वा केरिअब वरणौं उत्तमगाथ । येद्वौहंसध्व जसुवन रहेभक्तरघुनाथ १०४ छन्द चंचला । वासचंपकापुरी सुहंसकेत भूपजान । नारिकें समानपाल शोभहू अमानमान ॥ अश्वमेध धर्मराज यज्ञअश्व आवतत्र । कुंतिसूनु सव्यशाचि वीरयुक्त रक्षयत्र १०५ दूतवक्रहंसकेत जानिके अनन्दचित्त । पूँछियो बुलाइमंत्रि बन्धुपुत्र आदिमित्त । पार्थको तुरंगाक्षिप्र धारिहौं सजोरआज । होइगो महानलाभ यत्रकृष्णहैं विराज १०६ बिष्णुभक्त जिष्णुतत्र आइहैं अवश्यश्याम । भुक्तिदानि मुक्तिदानि कोटिकाम शोभधाम ॥ होतयारपत्रअत्र युद्ध अर्थ हौं तयार । भाषिहंस केतभूप जातभोनकी अवार १०७ दोहा । सप्तिनायक संगलै भेसन्मुख रणखेत । नायक प्रतिदलहोतभो रक्षत यत्नसमेत १०८ सहसएक सप्तकिरी स्यन्दन सोइप्रमान। एकलक्ष अश्वस्यपुनि रणहित कियो पयान १०९ सहसयून त्रय नवतिनव पदचर संख्यायत्र । दानपरायण भक्तहरि एक नारि व्रतितत्र ११० नायक रक्षत सैन्यपुनि नृपभ्रातर बलवान । नाम विदूरथ मेघबल धर्मबाहु मतिमान १११ चन्द्रसेन अरु चन्द्रध्वज चन्द्रदेव अतिवीर । न्यायवर्त्ति रक्षत कटक नृप भ्राताश्णधीर ११२ पुत्रपंच पुनि नृपतिके सुबल सुदर्शननाम । सुरथ सुधन्वा समसहित महाबली रणधाम ११३ यांविधि भूपति व्यूहरचि पारथदलकीओर । भये उपस्थित पुनिभयो दुन्दुभि

को अतिशोर ११४ गजारूढ़ भूपतिचले पीछे कटक अपार। विप्रन अशन कराइकै भेवाहन असवार ११५ सिंहनादकरि भटचले शोभित चामरछत्र। तासुप्रिया कौतुकलखन चढ़ीं अटारिनतत्र ११६ दुन्दुभिकोरव श्रवणकरि चले चत्रिसबहाल। पूरित तैल कटाहशिखि ज्वलितकराव नृपाल ११७ जो नहिं रणहित जाइगो ममआयसुको पाइ। भ्राता नाती पुत्रहू देहुँ कटाहडराइ ११८ आज्ञाभंग नरेन्द्रकी विप्रनको अपमान। शय्या नारीकी पृथक सो अशस्त्र बधजान ११९ दियो पुरोहित शंखको यहआज्ञा महिपाल। प्रथम सुधन्वा पुत्रजो सुनतभयो यहहाल १२० चलतभयो भूपति निकट मातहि शीशनवाइ। पार्थसमरहित जातहौं कहे वचन समुझाइ १२१ लावहुँ हरिं रणजीतिकै पाण्डवरक्षित जौन। याविधिसुनि अंगजवचन कहे मातुगुण भौन १२२ चतुष्पाद हरि त्यागिकै लाईय मुक्ति दकाहँ। बहुतबार नारदकहो आइनिकट नरनाह १२३ मम भर्त्ता जीतेअमित वीररणांगणपाइ। निजनयनन कीन्हो चहत अब दर्शन यदुराइ १२४ निशिदिन जिनको जपतनित लखियति नहिं सुखपाइ। जातेहोइ प्रसन्नहरि सुतसो करिय उपाइ १२५ दूरदूर हरिरहतहैं वराता आवनसोइ। तब हरिदर्शन पावनर महद्भाग्य जबहोइ १२६ पारथको गहिये सुवन वशहोवैं हरिआइ। क्षणक नहीं त्यागत सुनो निजभक्तहि यदुराइ १२७ यथा वत्सबन त्यागिकै धेनुभुवन नहिंजात। कष्टपरे तिमिनहिं तजत निजभक्तहि नँदतात १२८ युद्धसमय हरिसौंहँसुत भय न कीजियोतत्र। सम्बन्धी अरु लोकसब मोहिं हँसैंगे अत्र १२९ ऐसोपुत्र न कीजियो कहैं सकलमोपाहँ। तवसुत कृष्णविलोकिकै तजिआयो रणकाहँ १३० अद्यहर्ष तव पतनमें मेरेउर सुत होइ। यद्यपि यह अनुचित वचन कहतलोक नहिं कोइ १३१ पतित कहावत तौन नहिं हरिसन्मुख पतजौन। एकविंश उद्धारई निजसमेत सुततौन १३२ तेनारी रोदनकरहिं जासुपौत्र

सुत अत्र। हरि सन्मुख जावैं नहीं कहो सुधन्वा तत्र १३३
भाषित तव करिहौं सकल सुनिये माता बैन। पौरुष करिहौं अ-
मित मैं जय अधीन मम है न १३४ जन्म तवोदरके विषे विमुख
होउँ हरि देखि। जग में यशको त्यागिकै लहौं न सुगति बिशे-
खि १३५ चौपाई। यह कहि चलनचहे जिहि काला। कुवला
भगिनि आव तहँ हाला ॥ लाजा सुमन गंधहू लैकै। नीरा-
जनकिय आनँद कैकै १३६ माला कंठ बहुरि पहिराई। या
विधि कहे बचन सुख पाई ॥ लखिजात धनंजय पाहीं। साव-
धान करियौ रणकाहीं १३७ मोकहँ हँसत सकल ससुरारी।
ज्येष्ठादिक इमि कहत उचारी ॥ कुवले जनक मूर्ख तव भारी।
कहत कि हम जीतहिं कंसारी १३८ सुनत सुधन्वा कहो बखा
नी। कुवले होइ सत्य पितु बानी ॥ यह कहि नमस्कार पुनि
कयऊ। कक्ष्या बाह्य जात पुनि भयऊ १३९ प्रभावतीहि देख-
तिहिवारा। सुन्दर नयन अंग सुकुमारा ॥ चन्द्रक चन्दन चम्प
क धारे। दीपक कांचनपात्र सँवारे. १४० दोहा। सां भोज
दूर्वाक्षतहु अपर कपूर समेत। दीपपंच शिखधारि नव धवहित
खड़ी सहेत १४१ छन्द मनहरण। नूपुरसुमेखलाहु बलयविराज
मान कुसुमी बसन शुभ्र कंचुकीहिधारिसो। मोतीमाल कंठ मुख
रागहै अरुणजासु पतिहि समर्क वक्र दृष्टिसों निहारिसो॥ इ-
विधि नीराजि निजपति सों कहनलागी हरिहिलखन कितजात
तजि नारिसो। जात नाथ पारथ प्रबलके समर हित हृदय वि
वेक सुत मम सुखकारिसो १४२ दोहा। मूर्त्तिमान वह लखि
परै मम प्रिय कीजिय सोइ। तुमहिं गये नहिं लखिपरै जलदा-
ता इत कोइ १४३ पारथ हरिको जीतिकै कहोसुधन्वा बैन। पंच
बाणसों आइहौं तव समीप छविऐन १४४ कहो प्रभावति सु-
नियपति जे गे सौंह सुरारि। ते संसार न आवहीं लहत मुक्ति
सुखकारि १४५ कहत सुधन्वा बैन सुनि जो जानत यह सांच।
हरिदर्शनसों मुक्तिहै जलदाता किमि यांचै १४६ सुत संयुत

हरिपद लहत कहे प्रभावति बैन । शुक नारद सुत प्रगटकरि लह परपद सुख ऐन १४७ लखत सुतानन जे नहीं ऋणी कहावत सोइ । सफल पराशा जातकरि सकल काज तिहि होइ १४८ विफलपराशा जात करि जे तिन सिद्ध न काज।चिंतित कबहूं जानिये सुनिय बचन सुख साज १४९ या बिधि सुनि रमणी बचन कहो सुधन्वा बैन । तीव्राज्ञा महिपालकी जानो नहिं गुण ऐन १५०भयद दुन्दुभी बजतहै पूरित तैलकटाह।रणमण्डल जो जाइ नहिं भस्मकरै नरनाह१५१सुतदायक ऋतुदानजो निशि में सोइबखान । दिनमें मैथुनकर्म जो साधुनकरत प्रमान १५२ पुरबाहर सबबीरगे ममपितु आयसुपाइ। अर्जुनसों रणहेतसुनि-कहो नारि सुखपाइ १५३ छन्दबरवा । मैसराग बिनजीते चा हतजान । एक अनंगाबृतहौं लींजियमान ॥ अमित अंगयुत सेना जीतिकिजाइ । कृष्णसौंहँ अंतकसम भटबलदाइ १५४ कौनहोइ गतिमेरी तुमबिनसाथ। षोड़शयों दिनआयो जानि-यनाथ ॥ ऋतुभंगति जो पातक जानहुनाह । तीनिहोइँ इक ठौरी कीजियकाह १५५ ऋतुपूरित दिनहोवै श्राद्धसमेत । एकादशिब्रत तादिन पुण्यनिकेत ॥ कहो सुधन्वा सुनिये सुमुखीबैन । ऋषिन धर्मसंकटमें कह गुणऐन १५६ अन्नसूंघि निशिलीजै श्राद्धपिताकि । एकादशि ब्रतकीजै पातकचाकि ॥ अर्द्धरात्रिपर दीजै ऋतुकोदान । गृहीधर्म यहलीजै सुमुखी मान १५७ सुनत सुधन्वाबाणी युवतीकाह । विद्यमान पितु रावर रणनरनाह ॥ तातेदै ऋतुदानहि रणको जाहु । यहकहि कंठमडारे दोनोंबाहु १५८ कोमलकरके लागत जगो अनंग । सकोजाइ नहिं भूपज हितरणरंग ॥ कवचकाढ़ि धरिदीन्हो क्रीटउतारि । दिवारमणसो कीन्हो तिय सुखकारि १५९ सु षणाताभइ सोई गर्भहिधार । रणहित चलन सुधन्वा चह तिहि बार ॥ जबलगि रथचढ़िआवै भवन बिहाइ । हंसकेतु इतबोले बलपबुलाइ १६० दुन्दुभिरव सुनिआये सकलजुझार । देखि

सुधन्वा परतन जंगमँझार ॥ ममआज्ञा नहिं जानत भूलकटाह।
लंघित शासन नागत कारणकाह १६१ गजप्रति गजहरि
हरिप्रति कीन्हो गौन । पीछे कर्म सुधन्वा करतसुकौन ॥ जा
हिं यवन बलभारी मुद्गरधारि । केशपकरि तिहिलावैं पुहुमी
पारि १६२ भगवत विमुखहिं लावैं तीरकटाह। चले यवनलहि
आयसु हुतनरनाह ॥ पहुँचे मन्दिररम्य सुधन्वा जाहूँ । भुक्त
भोगलख आवत सुतभूनाह १६३ वज्रपात समभाषे आयसु
भूर। तुमहि ग्रहण हमआये सुभट अनूप ॥ किय किमर्थ भूप
तिकी आज्ञाभंग। रहे पृष्ठ सबकेरे तजि रणरंग १६४ तव पितु
क्रोधित दीन्हो हमहिं पठाइ।·खैंचत भूमेंलावहु मन्दहिजाइ ॥
अरिदल वारणजाइय भूपतिपाहँ । पद्मव्यूहरचि ठाढ़े जहँ नर
नाहँ १६५. कुपित वचन निजपितुके सुनिकै तत्र । सोरथस्थ
पहुँचतभे कटकसुयत्र ॥ तोयराशि समसेना योजनतीन। जहँ
अर्जुन जयकांक्षी भूपप्रवीन १६६ दो०। कुपित पितरलखि
नमस्करि अग्रहोतभे ठाढ़ । देखि सुधन्वाको नृपति कहा
क्रोध करि गाढ़ १६७ उल्लंघन शासनकियो क्यहिकारण
हेवीर। सुनत सुधन्वा पितुवचन कहें वचन धरिधीर १६८
जलद मांगियो तव बधू मोसो गृहमें तत्र। भई बेरतासों नृप
ति आयों शीघ्र न अत्र १६९ सूरखतर भुवनू अहै सन्मुख
कृष्ण नदेख । या संगर साक्षातहरि बंचितकुलतु विशेख १७०
पुत्रसो निकसे दै जलद प्रियां आपनी काहिं।तासोपूर्वज पावहीं
पूरण तृप्तीनाहिं १७१ जलदं त्वदीय मदीयसो हरिविन तृप्तिन
होइ। पूर्णपिपासा नरनकी पूरहिं बरुणनसोइ १७२ जो पुत्री
मुक्तीलहैं सुनहु सुताधमबैन् । तो श्वासू करहूलहैं हरिविनहरि
पदचैन १७३ पालनहयहित प्रासभे महाबली जगजिष्णु। तिन
कोक्षण छांड़त नहीं प्रगटबसत रणंविष्णु १७४ धिग्विचार धिगत्र
लखरस जो कीन्हों यावार। पुत्रआये हरिजानिकैं मन मनोजमें
धार १७५ कृष्णपराङ्मुख तूअहै डारौंतप्त कटाह। महापलीमस

कामरत असकुपुत्र सोकाह १७६ जाहुदूत मुनि निकट अब मोर
पुरोहित जौन। लिखित शंखसो कहियवे कहेंकरें हमतौन १७७
तिनके बचन नटारिहैं करें तप्त पुनितैल। पारथ आदिक यहलखैं
ममआज्ञा जुअपैल १७८ दूतपठाये भाषिइमिगे मुनिवरके तीर।
संशय वृप संकट विषे पूंछत कछु नृपधीर १७९ पृष्ठसुधन्वा गृहरहे
नृप आज्ञा पुनिटारि। जलद देनकरि कामना बिलमायो तहँ
नारि १८० जोहोवै कर्त्तव्य इतसो कहिये समुझाइ। लिखित
कहो या भांतिसो दूतन बचन रिसाइ १८१ जाहुदूत नृपसोंकहौ
मेरेबचन सुनाय। सत्य बचन शठनहिं करै परैनरकमें जाइ १८२
नारी सुत संह बिकतभे दियो कौशिकहि राजि।हरिश्चन्द्र निज
सत्यको पालतभे सुख स्राजि १८३ उद्यतभे निजनारि बध हरि
पादोदकि तीर। मृतसुत गात्रांशुकहरो वाराणसि नृपधीर १८४
दशरथ रामहिं देतभे मनु सम्वत बनवास। सत्यबचन निजकरत
भे जोकहकैक्यै पास १८५ अबहीं निज प्रणको कियो पुत्रपौत्र
अरु भाइ। आज्ञाभंगहि जोकरै देहुँकटाह डराइ १८६ चहतहोन
बिपरीतिसो जबलगि पुत्रन सोइ। पारथ केशव के बिमुख दाह
कटाहन होइ १८७ पाल्यमानें सो नृपतिकरि कामीतिय रत जौन।
नृपहि त्यागि अब भ्रातद्वौ करत अहैं हमगौन १८८ सत्यबाक
जहँ भूपनहिं कबहूं बसियन तत्र। बसे अवशि संसर्गतिहि गुण
आवतहैं यत्र १८९ पापहोतहैं नरन कहँ बसेनिकट तिहिभूप।
आशन सो शयनादिसो संपर्काहु अनूप १९० लिखित शंखहू
जातभे यहकहितजि थलदोइ।दूतगये उरवीश पहँ सकल सुनायो
सोइ १९१ मंत्रीसो समुझाइ कहहंसकेतु तिहि काल। तप्ततैल में
डारिये सुधन्वाहि लैहाल १९२ जात पुरोहित ढिग अहोंलावहु
तिनहिं मनाइ।सुधन्वाहुमेरेगये लखिऔ रणसरसाइ १९३ यह
कहिकै भूपति गये लायेतिनहिं मनाइ।तप्तकटाह सतैलजहँ आये
तहँ नरराइ १९४ सुमति सचिव सबकरतभे नृपभाषित तिहिकाल।
जाइसुधन्वा वीरसों कहोवचन इमिहाल १९५ काहसुधन्वा हम

करहिं तुमहिंदेखि बलवीर। अति करुणा आवतहिये शासननृ
पति गँभीर १९६ आज्ञाहु टारिनसकत सो जानत तुमअत्र।
शासननृपको कीजिये कहो सुधन्वातत्र १९७ निज जननी
शिरकाटियो जामदग्न्य पितुबैन। तुमहिंकौन परिदेवना परव-
शहो गुणऐन १९८ तप्ततैलमहँ डारिये मोहिंमरण भयनाहिं।
पुण्यक्रिया कीन्हे सुभग यह प्रतीति जियमाहिं १९९ स्नातदि
व्यअम्बरधरे लखोसुमति तिहिवार। तुलसी दल मालागले भ-
गवत नामउचार २०० लियउठाइ मंत्री तबहिं तप्त तैलमें डार।
सुमिरि सुधन्वा विष्णुपद भगवतनाम पुकार २०१ ज्वालमाल
आवर्त्तशत संकुल तैलहि देखि। देखि परोदय दुष्टउर जिमिकटा-
ह तिमिलेखि २०२ त्राहित्राहि गोविन्दअब सुनिकै मेरे बैन।
नलिननयन नलिनांघ्रिप्रभु चन्द्रबदन छविऐन २०३ यहजनि
चित्त विचारिये प्रथम नआयो एह। आगम मम यद्यपि सुनो
तदपिरहो तियगेह २०४ पीछे अब सुमिरण करत संकटमें मो
काहिं। भयविह्वल नर सुमिरहीं दुखमें सुखमें नाहिं २०५ कष्टरू
प सुखं धिगसदा हरिविनजानहुँ सोइ। आपदिमें सुमिरतभये
गोपादिक सबकोइ २०६ छन्दभाधवी। गजराजग्रसो झषराज
जबै शरणागतभो तव नामभना। तवमूरति पूजिलगावत भोग
न पावत आपन खातधना॥ प्रहलादपिता अति दुःखदियो म
णिखंभ बँधादिय त्रासघना। ध्रुवमातुकही कटुबानि जबै वय
पांच समातप ठानठना २०७ इनके दुख देखिसके नहिंआप तुरं
तगये सुखसाजसजे। ब्रजबोरत देखि महाजलसो गिरिराजधरो
कर इन्द्रलजे॥ कृशपाण्डव कानन बासमहा बलपाइ सुरावर
जंगगजे। अतिजोर दुशासन वीरमहा लखिबाढ़ि सुअम्बर मान
तजे २०८ दोहा। लाक्षागढ़ राखतभये पाण्डुसुतन जिमिआप।
तथाउबारिय मोहिंप्रभु याकटाह परितापं २०९ दावानलसों रा-
खियो ब्रजजन यथा अधीर। तप्ततैलकी ज्वालसों तथा मोहिंय
दुबीर २१० जरीसकल लंकायथा बचो विभीषणभौन। तप्ततैल

के मध्यमें तथाजरौं प्रभुहौन २११ सुवनपुरठ कश्यप यथा ज
रो न अग्निकराल । तप्ततैल शिखिमोहिं तिमि राखिय दशरथ
लाल २१२ तव सुमिरन करि अन्तमें मिलतमुक्ति सुखदानि ।
मेरोवनो बनावसो हियेवसे हरिआनि २१३ परनिन्दा होवैइतै
कहैंलोग इमिवैन । जारोगयो कटाहमें महाअघौ गुणऐन २१४
बलसो नहिं तोषित कियो कृष्णार्जुन कहँएह । मुक्तवाण गांडी-
व सो शकलीकरी न देह २१५ भई तासुगति चौर सम यद्यपि
बली अपार । बधो न दल हरि अर्जुनहि निज मानस नहिंधार
२१६ईदृश बहुविधि बचन कहि हास्यकरहिं जननाथ।वह्निदाह
सों राखिये अब मोहिं रघुनाथ २१७ या विधि कहि सुमिरण
कियो जबहिं सुधन्वाबीर । तैल सुशीतल होतभो जिमि सज्जन
मनधीर २१८ छन्द नाराच । प्रफुल्लवारिजात सो बिलोकितैल
मध्यतं।सुनेत्र कुण्डलश्रुतौ जनासु विस्मयंगतं॥ कठोर घोर शोर
तत्रहाहहाह होरहो।हमैं न भूपडारियो कटाह क्यों सबैकहो २१६
दोहा । लखि जन भूमें गिरतहैं त्यागत अश्रुप्रवाह । वक्षस्थल
करताड़हीं क्रोशतहहाहहाह २२० लख हंसध्वज शंखयुत तैरत
पुत्र कटाह । पुण्यनाम हरिके जंपत राम कृष्ण जग नाह २२१
कहो शंख तब नृपति सन तप्त न तैल कि एह ॥ मंत्रौषधके पुत्र
तव जानतहै गुणगेह २२२ तैलप्रज्वलितके विषे विकासित मुख
छबि देत । दूत नारियल डारिये तैल परीक्षा हेत २२३ सुनत
दूत मुनिवर बचन तैल मध्य फल डार । द्विधा भूत लागो उछ-
लि शंखहुलिखित लिलार २२४ लगो उच्छलन तैल पुनि धूम
समूह अपार । जियालाल हरिभक्तको बांकोजात न बार २२४
पूँछत भृत्यनसों भयो शंख तत्र तिहि काल । मूलौषध तन
बांधियो पतत सुनु महिपाल२२५.काहसुमिरि नृपसुतगिरोइहि
कटाह मधिअत्र। कहतदूतहरिरामकहि.परतभयो सोतत्र २२६
जाके सुमिरन मात्रते संकट योनि नशात । तिनहीको सुमिरन
करत देखहुछबि सरसात २२७ ओप्रसुधन्वा के चलत देखहु

शंख निहारि । पात्यमान हरिभजत जो कहदर धिगधि हमारि २२८ निकटबाल कहि लखत हम महाअघौ गुणगेह । करि हैं प्रायश्चित्त अब मरणांतिक निजदेह २२९ कहिपगात इमितैल में सुधन्वाहि लपिटाइ । भाषत क्षत्रिय साधुभो तुमसुसाधु भटराइ २३० विप्रन अधम असाधुहम तैलपात करवाव । तापयु कते होतनर जेगोविन्द नपाव २३१ सुमिरत भगवत नामजे सर्वका म फलदानि।तापत्रय सों छूटहीं सुखपावत दुखहानि २३२ मुनि जिनको देखत नहींगुरू सुरासुर जौन।प्राणअंतमें सुमिरियो मन बाणीसों तौन २३३ तव शरीर संपर्कते तन पवित्र मम अत्र । राज राज पुत्रन भटन चालं पावय सुत तत्र२३४उठिय वत्स या तैलसों मोहिं निकारहु वीर। सारथि हरिहों जिष्णुहित करहु युद्ध धरिधीर २३५ धरणी निजयश थापियै पीछे मंगल होइ । कहि करमोंकर गहिलियोगे रणमंडल दोइ २३६ लखिय सनात न पुत्र निज कहो नृपतिसों बैन । विद्या मूल सुधारियो निज आनन गुणऐन२३७चौपाई । जपो नृसिंह मंत्र सुख सारा।रच्छा करत भये करतारा ॥ मोहिं पवित्र कियो यश छाया। तुमहिं पवि त्र करन अबआयो२३८दो०।सुनि हंसध्वज उठिमिले वचनकहे इमिभाखि । मैंसुतडारो तैलशिखि लीन्हो भगवतराखि २३९ माहातम भगवतलखो तुमकहँ डारिकटाह.। उठि रथचढ़ि दर-शाइये पारथ सारथिकाह २४० भूसुर नृपपद बन्दिकै चढ़ो सु धन्वावीर। रत्नरचित रथ बज्रपुनि कूबर हेम जँजीर २४१ दीर्घ ध्वज शुभ चक्रयुत बहु गवाच्छ सुखदात। हेमवर्ण हययुक्त जहँ विविध गमनगति भात २४२ ताच्छण शोभित भूपदल पारथ दलकीओर। कालचक्रसम लखिपरत जनु उमहे घनघोर २४३ कवच किरीटनकी प्रभा छाइरही रणमाहँ । जगत प्रकाशित होतभो नयनमूँदिगे ताहँ २४४ गजपुष्कर जलसो छमा वि षमभई समयत्र । भई विदारित हयपदन छाइरही रजतत्र २४५ गर्जत प्रलयपयोद जिमि स्यन्दन शब्द अपार । चरण न्यास

कम्पतमही सहित सकल दलभार २४६ कह हंसध्वज भटनसों। गहियबाजि इहिकाल । गहिलावत हयसो भये शीघ्रायसुमहि पाल २४७ पूजित चर्चित अश्वलखि पद्मव्यूह मधिकीन्ह। पुत्र सहोदर सहित नृप अर्जुन रण चित दीन्ह २४८ सुरथ सुधन्वा सुमतिहू मंत्रीबुद्धि अगार। बीरकेतु अरुतीत्र रथ शतधन्वा भ- टभार २४६ अन्य नृपति बहु अग्रदल । अर्जुन सों रणहेत। चलत भये दुंदुभिबजे ढकढोलमुदसेत २५० मर्दल पटहनिशान हू वेणुतंत्रकीतत्र । शृंग मृदंग नबादिरे पणवानकहू यत्र २५१ छन्दरामगीतिका । भेरि गोमुखका हला।दिक बजे डिंडिमतत्र। तालमुरली जलजझर्झर बीरआगमयत्र ॥ कोशगिरि सागर फटे उर कादरन हरचाव ।. देखि अर्जुन कृष्णसुतसोइ विविध वचन सनाव २५ २अश्व भूपति धर्मकोलिय हंसकेत नरेश। कौनभट तिहि मोचिबे कहँ जाहिंगे बलवेश ॥ पुत्रयुत बलवान तुमहो यौवनाश्वमहीप । सात्यकी अनुशाल्वहू कृतवर्महू कुल दीप २५३ वृषध्वज अनिरुद्धयोधा नीलकेतु महान । अपरभट बहु अत्रराजत देशपर यहजान ॥ नाथतुमहो सकल दलके अग्रहौं अबजात । भूलियो किमि कृष्णभाषित कहो हरिसुत बात २५४ सौंपियो पितु तुमहिं ममकरधर्मभूपति अग्र। अद्य में भुजबलहि देखहिं समरबीर समग्र ॥ हंसकेत नरेशमंत्री। सु मति सुरथसमेत। सुधन्वाहु समेत तोषित करहुँगो रणखेत २५५ सुनत इमि प्रद्युम्नके बरबैन कर्णकुमार।युक्त कहत नदोउ तुमकर जोरि बचन उचार॥दोउ प्रलयोत्पत्ति कारक अल्प दल यहकौन। प्रेरिये किमि बाडवानलतू लगत मुख पौन २५६ नेत्र यद्दम प्र- हार नाशहि मशकयदिह बीर । तार्क्ष्य नाशन तासुके हितभे जिये किमिधीर ॥ स्वल्प सीकर वर्षसो रजशमित होवैयत्र। तासु नाशनहेत बरषहिं जाइ बरुण कि तत्र २५७ जाइलावहुं अश्व आयसु दीजिये मोकाहँ। हारिजनहिं हरिदास यमभट पद्धजा बिधिताहँ ॥ भाषि याबिधि कर्ण अंगज चलत भो

समुहाइ। कीन्ह यद्यपि पार्थ वारण गयो शंख बजाइ २५८
गर्जत पताका शुभगरथमें सारथी सो काह। पद्मव्यूह लखात
दारुणलै चलियरथताह॥ कसाघात उड़ाइयो हयसारथी तिहि
काल। लखत भो वृषकेतुको तिहि काल सुत महिपाल २५९
दो०। लीला करि आवत चलो पद्मव्यूह नहिं देख। वृषयाके
ध्वजमध्यहै अर्जुन नहीं विशेख २६० छन्दराम गीतिका॥
अपर कोउ अकेल आवत बीर सत्य समेत। धनंजय समतेज
याको बधिहि नृपनसचेत॥ हम स्रवनको निदरि आवत ताहि
सो यह एक। जाहिं हम संग्राम याके लरहिं धारि विवेक २६१
सूतमम रथलै चलिय यह सुभट आवत जाहँ। सुनि सुधन्वा
बैनसारथि लैगयो रथ ताहँ॥ दोउ तीव्र.पराक्रमीभे युद्ध उद्यत
तत्र। सुधन्वा वृषकेतु सो यह भये पूछत अत्र २६२ दो०।
काके आत्मज कौन तुम काह नामहै बीर। कश्यप सुतरवि
सुत करण भये दानमें धीर २६३ तिनके अंगजहम अहैं नाम
मोरवृषकेतु। हंसध्वज सुत हम अहैं कह्यो सुधन्वा हेतु २६४
छन्दरामगीतिका। मधुरछन्दा ऋषि अहैं मम वंशकारकपूर्व।
तिष्ठ संगर अश्वमेरवल लखाव अपूर्व॥ यथा सूरजध्वांत ना-
शक तथा अरिदलहोउ। स्वकुल वर्णत मन्द पौरुषहीन पूरुष
सोउ २६५ कहत इमिवृषकेतु सुनिकै बल दिखावोंअद्य। करहिं
ममशर तीक्ष्ण तवदलमहँ प्रवेश सुसद्य॥ भाषिनृप सुतको
छपायो बाण बरषा यत्र। भेदि गजरथ अश्वडारो गरजि हरि
समतत्र २६६ जीवगत करि भूमिडारो कर्णको सुतबीर। शरसु-
धन्वा कटक बेधे चहूं दिशि सों धीर॥ बाण गुप्तलखात पत्रन
परीनृप सुतभीर। सारथी ध्वजबेध शायक हरनि उर अतिपीर
२६७॥ पांच बाण प्रहार.हँसिकै भूप सुत उरतत्र। गार्ध्रपत्र
प्रहार तीक्ष्ण पतित भो दलयत्र॥ कांटियों ध्वज छत्र चामर
क्रोधयुत सुत कर्ण। खण्डियो शिरबाहुसायुध छण्डि शर बहु
वर्ण २६८ मित्र निज दल लखि सुधन्वा चढ़त भोरथअन्य।

अमित पौरुष देखिशर झरिकीन्ह समपर्ज्जन्य ॥ तुरग सारथि केतु छत्रहु हनत भोतिहि बार। खण्डियो वृषकेतुको धनुपंच शायकमार २६९ जातभो भ्रममाण दलमेंबहुरि मुर्च्छा त्यागि। लखत भोदलमध्य आपुहि लखत तिहि रणलागि ॥ लियो गोतिहि देखि आगे बिरथ आपुहि देखि। त्याग खैंचिदृढ़न्य बाणन हेमरचित विशेखि २७० छिन्नबाणन अंग पूरण मनहु छिन्न नहोइ। कियो हंसध्वज कटक तहँ हीन जीवित सोइ ॥ कर्णसुत परसैन्य आवृत शक्तितोमरचण्ड। भिन्दिपाल भुशुण्डि मुद्गर परिघपट्टिश दण्ड२७१ अयोमुख नाराचहू करपत्र शूल समेत। अर्द्धमान स्वदेहपर दल सुमिरखीपतिकेत ॥ महाध्वजयुत अन्तरथ लैगयो सारथितत्र। चढ़त भे वृषकेतु तापर करी शरझरियत्र२७२ तीच्ण शायक अंगनृप सुत मारियो तिहि काल। सैन्य पीड़ित कीन्ह बहुबिधि बाण झरिकरिहाल ॥ तब सुधन्वा क्रोधसंयुत पंचशायक छण्ड। बाणलागत कर्णअंगज देहमुर्छा मण्ड २७३ दो०। मुर्छितलखि वृषकेतुको रणमण्डल तजि ताहँ। जातभयो सारथि तबहिं आधकार्णि रणमाहँ २७४ तिष्ठ तिष्ठकहि पंचशर मारतभे तिहिकाल। सूत सुधन्वाको बधो बधेअश्व पुनिहाल २७५ एकबिंश रथखण्डियो धनुषदले पुनितीन। प्रद्युम्नहि तब जहनियो भूपतिसुत परवीन २७६ लीलायुत रणकरतभो निजपौरुष दरशाइ। किय अद्भुत संधानपुनि रोषहिये सरसाइ २७७ अष्टबार हयहनतभो पंचबार धनु तत्र। सारथिको शिरकाटियो भोअद्भुत रणयत्र २७८ तीनि बाण प्रद्युम्नके हतिगरजो तिहिकाल। उभय विशारद जंगहैं दोनोंवीर विशाल २७९ भूतल नभरण करतहैं मुर्छिगिरत शर लागि। रुधिरोक्षित उभयांगहैं भिरव बहुरि रिसपागि २८० चढ़ो सुधन्वा अपररथ क्रोधित छांड़ेतीर। वीरसहस्रन बधतभो पार्थसैन्य गँभीर २८१ कृतवर्मा तनु बाणनव हनतभयो अति जोर। कृतवर्मासो शरदले पांचबाण तजिघोर २८२ उरसि सु-

धन्वा पीड़ियो तब भूपतिसुत तत्र । नवशरसों हार्दिक्यरथ खण्डितकीन्हो यत्र २८३ जूझो सारथि हयनयुत शरपीड़ित तिहिकाल । कृतवर्मा भागतभये आयो रण अनुशाल्व २८४ कहो सुधन्वासों बचन गहि धनुबाण कराल। निजबलसों तोषितकियो तुम बहुवीर विशाल २८५ सहिये एक हमारशर असकहि छांड़ोतीर । बड़वानल समसोचलो दारुण प्रबल गँभीर २८६ लागो काटन भूपसुत परनहिंसको बचाइ । हृदयमध्य लागतभयो वह कठोर शरआइ २८७ अमितसेन दलिसो बहुरि तजे बाण नवजोर । विरथकियो भूपतिसुवन गर्जतभो रवघोर २८८ छन्द रामगीतिका। जागि मुर्छासो सुधन्वा एक शायकखण्ड । गिरतभो अनुशाल्व भूमें लगत मुर्छामण्ड ॥ तब सुधन्वा दलनलागो पार्थको दलतौन । गजानीक विभेद बाणन अश्वनर रणजौन २८९ बही रुधिर अपार सरिता मांस कर्दमअत्र । गजानन हय शीर्ष संगरपरे सहसनतत्र ॥ रुधिर बहु बहिजात सरिमधि भग्नपारथ पत्र । बाणसप्तति हति सुधन्वा गर्ज सात्यकि यत्र २९० दो० । इषुसप्तति शरखण्डिकै सात्यकिको रथजौन । सूतध्वज हयछत्रयुत दलो सुधन्वा तौन २९१ स्यन्दनचढ़ि दोऊ सुभट भेउद्यत रणमाहँ । अम्बर बाणन छाइयो शतन सहस्रन त्राहँ २९२ त्रिशीर्णाग शरदोउ भे बहत रुधिर परवाह । किंशुक इव राजतभये जनु बसन्तऋतु चाह २९३ सात्यकितन मारतभयो शक्तिमहा विकराल। शक्ति घात युयुधानलहि कश्मलपाव विशाल २९४ छन्दरामगीतिका। देखि तहँ शैनेय मुर्छित भयो हाहाकार। भयावृत बल देखि संगर रायें जिष्णुजुझार॥ कह सुधन्वा पाहँ ठाढ़े होहु संगरवीर । युद्धहमं बहुवीरजीते तब अधिक बलधीर २९५ द्रोण भीष्मसकर्णजीते कृपाचार्य सुजौन । समर शंकर असुरकाल समान जीतेतौन ॥ भयो विस्मय नाहिं जैसो भयो तुमकहँ देखि । तत्र सारथि कृष्णरावर कह सुधन्वालेखि २९६ कृष्ण

त्रिन संग्राम यामें भयो विस्मय अत्र । युद्ध मोसनहोइ किमि
ताजि कृष्णआये तत्र । बाँधिजूप तुरंग रावर यथोचित इहि
काल । हंसकेतु नरेन्द्र करि हैं वाजिमेध विशाल २९७ अद्य
मम संग्रामदेखहिं देव आनँदपाइ । जीतिहौं रणमाहिं तुमको
सहितहू यदुराइ ॥ सुनत अर्जुन बाणशत संधान कीन्हेहाल ।
सुधन्वा शरदिव्यसोई काटियो तिहिकाल २९८ मारियो दश
बाण अर्जुन अंग नृपसुतबीर । शतसहस्रन अयुत प्रयुतन त-
जतभो पुनितीर ॥ अर्जुनहु तिलमानकाटे बाणताके सर्व ।
अग्निअस्त्र सुमोच अर्जुन क्रोधसंयुत खर्व २९९ खचर नभनहिं
जात अर्जुन बाणछायेघोर । तिंहूपुरमहँ तिमिरछायो बाणछाहँ
अथोर ॥ जरतलखि निजदल सुधन्वा पावकास्त्र अपार । अग्नि
नाशनहेत तत्क्षण वारुणास्त्रप्रहार ३०० घनघुमरि चहुंओरआये
लगे वर्षनतंत्र । मग्न पाण्डव कटकवर्षन उपललागे यत्र ॥
मोरचातक लहे आनँद शीतमोहित वीर । वाद्यनष्टसु भये बस्त्र
लखातनहिं रणधीर ३०१ वर्मचामर कुम्भकरिवर शोभहीन
लखात । वाणपत्त्र विहीन चलत न करत शत्रुनपात ॥ जानि
स्वपरन परत अर्जुन लीन्ह बायब्बान । टूटि ध्वज रणगिरन
लागे जलदभे गतमान ३०२ तब सुधन्वा अर्द्ध विधुशर जि-
ष्णुगोकिय खण्ड । पंचसूतहु शीशकाटो तीनि शायकछण्ड ॥
हीनशायक कीन्ह पार्थहि कहतभो इमि बैन । गयो पौरुष आ-
जु रावर कृष्णबिन गुणऐन ३०३ सूत सर्वग त्यागिकै किय
प्राकृतहि इहिकाल । गिरहिगो मम अस्त्रनाहित सुमिरिये हरि
हाल ॥ गहो अर्जुन तुरगहू पुनि वामकर धनुतान । युद्धकरन
बहोरिलागे तजतभे बहुबान ३०४ सुमिरियो जबताइँ हरिको
परे रथपरदेखि । सुचअर्जुन अश्वयाविधि कहे वचन विशेखि ॥
हरिहि आये जानि अर्जुन करतभे परनाम । अश्वप्रग्रह+त्यागि

---

+ प्रग्रहरश्मी ॥

आनँद पावचित्त ललाम ३०५ तजनलागे वोरशायक तब सुधन्वापाहिं। तब सुधन्वा कहतभो इमिदेखि हरिरथमाहिं॥ अबहम हरिकाहँदेखो हेत पाण्डव आव। सदासर्वग तुमहिं जानत वेद भेदनपाव ३०६ करहु अर्जुन अब प्रतिज्ञा हमहिं जीतनहेत।तोषहीं जगकाहँ पौरुष धारि हम रणखेत॥कहो अर्जुन तीनिशरसों काटिहौंशिरतोर। जो न काटहुँ पुण्यगतपर नर्कपूर्व जमोर३०७ आपहू प्रणकीजिये अरु पालिये निज काहँ।पार्थके ये बैन सुनिकै कह सुधन्वा ताहँ॥ अब्रहरि यह कहतहौं शरका टिहौं तव जोर। त्रिधा खण्डित भूनडारौंलहौं गति अतिघोर ३०८भाषि इमिशर शतनमारे हृदयहर्षित वीर। रथ उड़ाइ भ्रमाइयोसहकृष्णपारथ धीर॥ भ्रमो सो घट चक्रवत शरविधे अर्जुन अंग। पुछ्गोरथ नल्वमात्र+सुबाणकें परसंग३०९ देखि श्रीहरि कहनलागे लखिय अर्जुन याहि। कीन्ह प्रणइमु तीनिसो बधकि यो सो भलनाहिं। जयद्रथ बधहेत प्रणकिय लहे बहुदुख ताहँ। भयोविस्मृत सब धनंजय चेत नहिं मनमाहँ ३१० पदन सो हमरेष संयुत रोकते रथकाहँ। नल्वमात्र+हठाइदीन्हो बाण के बलयाहँ॥ एक पत्नी धर्म संयुत भूप सूनुलखात। तुम न हम करिसकत हैं प्रणकरहिंगे तबघात ३११ कष्टदीरघ होइगो यह जिष्णु मोहिं लखात। मारिहौं इषु तीनिसों यह कही अर्जुन बात॥ होत कष्ट अवश्य जो नहिंआवते यदुराइ।भाषिपारथछाव दशदिशि बाणकी झरिलाइ ३१२ धनुष पावत रोषसंयुत कह सुधन्वा धीर। राखिये अब पार्थ जिमिब्रज धारि गिरियदुबीर॥ कीन्हशर संधान अर्जुन क्रोध संयुततत्र। कालशिखिसम छूट शायक पुण्यदिय हरियत्र ३१३ दो० धेनुगोपरच्छाकरी धरिगो-वर्द्धन हाथ। तौन पुण्य तेहिबाणपर धारतभे यदुनाथ ३१४ उभय समर देखन अभंव आवतभे तेहिकाल। अप्सराहुआईं लखन शोभितरूप बिशाल ३१५ पारथहितकारक निरखिकृष्ण

+ नल्वमात्र चतु:शतह स्तमित स्थान।

काहँ तेहि जंग। यह शायकमें काटिहौं कहभूपज सो मंग ३१६
बहुतपुण्ययुत बाण यह जो काटौं मैं नाहिं। गत्तसतस्कर भो-
गहीं पुण्य हमारी काहिं ३१७ जानतहौ गोविन्द यह देखहु
पुण्यहमारायहकहि ताजि विश्वर्द्धशर खण्डिबाण महिडार ३१८
भई शंकातिहुंलोकमें बिस्मितअमर विशेख॥ द्वितिय बाण अ-
र्जुन लियो लाघवताकी देख ३१९ पुण्ययुक्त श्री हरिकियो
भूमिदान जो कीन्ह। पाण्डवरत्ताहेतलखि कहन सुधन्वालीन्ह
३२०दीन्हो शरमें पुण्य निज अर्जुनार्थभगवान। अर्जुनकोशर
काटिहौंतव देखत गतमान३२१निज शरकी रत्ताकरिय पार्थपरा
क्रम धारि। धन्यधनंजयहेतजिन देवैं पुण्यमुरारि ३२२ पुनि भी-
षणछाँड़त भये रविमण्डलसमबान। यथा कृपणधन क्रोधचख
अरुणसूनु मघवान ३२३ कहत देवगणगगनमें धरणी मनुज
बखान। काहहोइ को जीतिहै उभयबीर बलवान ३२४ प्रगटी
बहु शिखिबाणसों शायकगोनभमाह। अर्जुनके करसों छुटी
प्रलय करैगो काह ३२५ तबहिं सुधन्वा जोरकरि तजि शर
काटो बान।शंखबजावत पुनि भयो आनन्द हियसरसान ३२६
सदल पितहि हर्षित कियो कँपीभूमि तेहिकाल। बाण छिन्नल-
खि जिष्णुसो कहत भये हरिहाल ३२७ युक्त करिय मार्जुन
शरहि दररवकीजिय अत्र। भूपजु पौरुष देखिये धनि कीरति
है तत्र ३२८ दई पुण्यहम शर बिषे तदपि सके नहिं जीति।
सत्य प्रतिज्ञा करहिगो स्वर्गकांक्षियुत नीति ३२९ भये बजावत
भाषिइमि पांच जन्य भगवान। देवदत्त अर्जुन धमो छायोश-
ब्द महान ३३० अच्युत मुखकी वायु लहि पांच जन्य ध्वनि
जोइ। भूपताल दिशि विदिशिपति भयो कर्पावृत सोइ ३३१
पूरि शब्द इमि कहत भे अर्जुन सों हरिबैन। अबशायक कर
लीजिये मम आज्ञा गुणऐन ३३२ लियो पार्थ शर हस्तमें दृढ़
कीन्हों हरियत्र। शरके पश्चिमभागमें बिधिहि युक्त किय तत्र
३३३ कालहि थाप्यो मध्यमें फलमें बैठे आप। पुण्य रामअव-

तारकी जाको विदित प्रताप ३३४ सोऊ अर्पित करतभे वाण-मध्य तेहिकाल। संधित कीन्हों पार्थ जब हाहामची कराल ३३५ देखि सुधन्वाबाणअस कहत भयो इमिबैन। जानों मैं गोविन्द जो करतभये गुण ऐन ३३६ सहसा मेरेबध हितै विश्वदेह थित वाण। करहु प्रतिज्ञा पार्थ अब कीजिय सत्य प्रमाण ३३७ इहिशर काटहु शीशतव जो न करौं मैं येह। जो अघ हरिहर भेद करि सो लागै मम देह ३३८ कहो सुधन्वा काटिहौं यहशर सत्य प्रमाण। तब अर्जुन संधित कियो बड़वानल समबाण ३३९ भगीं अप्सरा गगन में सुरनभयो भयतत्र। बाणशब्दसों नष्टभो बाद्यन को रवयत्र ३४० कांपत उर्वी ह्वैभई कपोसुधन्वा नाहिं। कोप सहित बोलतभयो या बिधि पारथ पाहिं ३४१ मोसों रक्षा करत तब देवहरादिक वीर। काटहुँ शरसंदेह बिन हाहतोस्मि रणधीर ३४२ तजिसंग्रामन अबइहौं इहि अवसर यदुनाथ। लज्जापावै मातुमम हंसध्वज नरनाथ ३४३ जानत तुमहिं नृसिंह हम पारथ सारथि तत्र। तिष्ठमान होरण करिय करहु जिष्णुबल अत्र ३४४ यह कहि कृष्णहि सुमिरिकै काटत भोशर तत्र। आधो कटि पुहुमी गिरो हाहा भोअति यत्र ३४५ बाहु बजावत निजभयो तबहिं सुधन्वा बीर। विधुमंडल कंपत भयो तिहुंपुर भयो अधीर ३४६ अर्द्धबाण शिर काटियो तबहिं सुधन्वा धाइ। ज्वलित रम्य कुण्डल सहित परो कृष्णपद जाइ ३४७ रामराम मुखसों जपत पुनि कबंध तिहि बार। भ्रमतभये अतिबेगसों नाशो कटकअपार ३४८ दोऊहाथनगहतभे केशव सोंशिरखेश। तासुख निकसत तेज भो हरिमुख कियोप्रवेश ३४९ केशवशीश उछारिलै हंसध्वजरथडार। हंसध्वज सुत शीशलखि कीन्हबिलाप अपार ३५० किमिमोसन बोलत नहीं सुनहुसुधन्वाबैन। पितातुम्हारो मैंअहौं रूठे किमि गुणऐन ३५१ डारो पुत्र कराहमें तैल तप्तरह जोइ। दीन्हो तीक्षण दण्डमैं पुत्रनेहको खोइ ३५२ कियोप्रतिज्ञा सफलरण तोषितकिय हरिपार्थ। प्रभा

वती मनसिज शमित कियदै जलद यथार्थ ३५३ पुनि हँसि मुख चूमतभये निजधन माथ लगाइ। पुनि बोलत भूपतिभये पुत्रशोक उरछाइ ३५४ उठहुपुत्र गहिये तुरँग अर्जुनको इहि काल। प्रद्युम्नादिकसों करिय संगर सुवन कराल ३५५ कियो कुवलयोदितसकल जननी भाषित जौन। सुरथादिक सुनिये नहीं बोलतमोसोंतौन ३५६ कहोसुरथ इमिरणविषे किमिरोवत नरनाथ। भयोयुद्धहत पुत्रतव तासुशीश गहिहाथ३५७कहहंस-ध्वज सुरथसन रोदनकारणयेहू। छिन्नशीश हरिपद गिरो पूर्ण सुकृत गुणगेह ३५८ सोपदत्यागतशीशभो मिलत पुण्यअति जोर। अघसोंहोत वियोगतिहि कौनप्रगट अघघोर ३५९ मो पर दियो चलाइहरि कुण्डल शोभित जौन। स्यन्दन कृष्णप-वाँरिहौ पुत्रशीश यहतौन ३६० प्रेरत हंसध्वज भये शीशकृष्ण रथफेरि। अन्तर्हित चिक्षेपहरि गगनतासु सुखहेरि ३६१ भक्ता भयद विलोकिहर रुण्डमाल धर तौन। दुखहारक पितुसोंवचन कहो सुरथ गुणभौन ३६२ छन्दरामगीतिका। अद्यतात बिलो-किये हरिपार्थ सों ममयुद्ध। सैनिका अवलोकहीं ममबन्धु मारों क्रुद्ध॥ भेदिहौं शर पार्थकेतन और बहुजगबन्द। तिष्ठमान जु होइँगे ममअग्र देवकिनन्द ३६३ भाषिस्यन्दन बैठिआतुरसैन्य लै बहुसंग। शंखनाद सुकीन्ह,हर्षित सिंहनाद अभंग॥ धारि धनु निजहस्तमें कहंपार्थसोंइमिबैन। तिष्ठ ममसंग्राममें हरिरक्षिये गुणऐन ३६४ सुरथहौंतवंशत्रुआयो पुण्यदैममभ्रात। वधकरायो बालवत नहिंलखी हानिकिबात॥ यथाबालक देइमौक्तिक बरद फलकोलेत। तथादैनिजपुण्यमुक्ता पार्थकेहितहेत ३६५ लीन्ह जीवन तुमसुधन्वा बदरफलके मान। सत्यहौ गोपालमोहिं न जानहूभगवान॥ कहँ सुधन्वा गयोभ्राता देखिये हम नाहिं। अद्यपांडव पाइकै भोहर्ष अति मनमाहिं ३६६ ताहि ताविधि देखिकै कहकृष्ण पारथपाहिं। हांकि स्यन्दन चलहिं अनतहि रहिय थिर इतनाहिं॥भ्रातृदुखकी तापतापित पुण्यवपु बलवान